SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 23 • ISSUE 12 • FEBRUARY 2025

हिन्दी मासिक

फरवरी 2025

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।

अल्लाह फरमाता है :- बेशक अल्लाह ही के पास क़यामत की जानकारी है और वही बारिश बरसाता है और गर्भाशय के अन्दर जो कुछ है उसको जानता है और कोई भी नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा, और कोई नहीं जानता कि किस जगह उसकी मौत होगी, निःसंदेह अल्लाह खूब जानता पूरी खबर रखता है।

(सूर : लुक़मान -34)

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक)	60 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

फरवरी 2025 वर्ष 23 अंक 12

समाज की चिन्ता

किसी समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा यह है कि उसके अन्दर जुल्म का मिज़ाज पैदा हो जाये और इससे अधिक खतरनाक बात यह है कि अत्याचार की प्रवृत्ति को नापसन्द करने वाले उस समाज में बहुत ही कम या नहीं के बराबर हों।

अगर इस देश को और स्वयं अपने आपको तबाही से बचाना है तो आप इन दो दुश्मनों का मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो जायें– एक रिश्वतखोरी, दौलत की हद से बढ़ी हुई हिर्स, दूसरे हिंसा व आतंकवाद।

(हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
आह!मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	10
हमारी नाकामी के असबाब	मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी रह0	12
आओ दिलों को जोड़ें	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	14
नदवे का तराना (पद्य)	मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0	16
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	18
लोगो! शाबान आ गया है	जमाल अहमद नदवी	21
कुरआन और मानव सम्मान	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	27
मेरी शरारत	मायल ख़ैराबादी	29
न्याय के साथ या अन्याय	डॉ0 प्रदीप कुमार	31
समाज सुधार (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	33
कुरआन का संदेश	मौलाना इक़बाल नदवी	34
बाबरी मस्जिद की शहादत	इदारा	36
मानवता सन्देश	शारिक़ अलवी	37
रोटी	इदारा	39
स्वास्थ्य	डॉ0 धर्मेन्द्र	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-इब्राहीमः-

अनुवादः—

और उस दिन से लोगों को डराइये, जब अजाब उन पर आ पहुंचेगा तो अन्याय करने वाले कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! थोड़ी सी अवधि के लिए हमें और मोहलत दे दे, हम तेरी बात मान लेंगे और पैगम्बरों के रास्ते पर चलेंगे (उनसे कहा जाएगा) क्या तुमने इससे पहले कसमें खा—खा कर यह नहीं कहा था कि तुम्हारा तो पतन हो ही नहीं सकता(44) और तुम उन लोगों की बस्तियों में रहते थे जो अपने साथ अत्याचार कर चुके थे और तुम्हारे सामने खुल कर आ चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया और तुम्हारे सामने उदाहरण भी दिये थे[1](45) और उन्होंने अपनी चालें चलीं और उनकी चालें तो अल्लाह ही के कब्जे में हैं, यद्यपि उनकी कुछ चालें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाएं(46) तो अल्लाह के बारे में हरगिज यह न सोचना कि वह अपने पैगम्बरों से वादा खिलाफ़ी करने वाला है बेशक अल्लाह जबरदस्त है बदला लेने वाला है(47) जिस दिन ज़मीन यह ज़मीन न रहेगी और (न) आसमान (यह आसमान होगा) और एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने सबकी पेशी होगी(48) और आप उस दिन अपराधियों को देखेंगे कि वे बेड़ियों में जकड़े हुए होंगे(49) उनके कुर्ते गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग की लपटें होंगी(50) (यह सब इसलिए होगा) ताकि अल्लाह हर—हर व्यक्ति को उसकी करतूतों का बदला दे बेशक अल्लाह जल्द हिसाब चुका देने वाला है[2](51) यह लोगों के लिए एक संदेश है ताकि लोग सावधान कर दिये जाएं और ताकि जान लें कि वह तो केवल एक ही पूजनीय है और ताकि बुद्धि वाले होशियार हो जाएं(52)।

-ःसूर-ए-हिज्रः-

(यह मक्की सूरत है और इसमें 6 रुकू और 99 आयतें हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अनुवादः—

अलिफ लाम रॉ, यह (अल्लाह की) किताब और एक रौशन कुरआन की आयतें हैं(1) किसी समय वे लोग कामना करेंगे जिन्होंने कुफ्र किया कि काश वे मुसलमान होते[1](2) आप उनको छोड़िये, खाएं और मजे करें और आशा उनको असावधान रखे बस आगे उनको पता लग जाएगा(3) और हमने जिस बस्ती को भी बर्बाद किया उसके लिए निर्धारित (समय) लिखा हुआ था(4) कोई भी क़ौम अपने निर्धारित समय से न आगे हो सकेगी और न पीछे(5) और वे कहते हैं कि ऐ वह व्यक्ति। जिस पर नसीहत उतरी है तुम तो निश्चित ही दीवाने हो(6) अगर तुम सच्चे हो तो फरिश्तों को हमारे पास क्यों नहीं ले आते(7) फरिश्तों को तो

हम सत्य के लिए उतारते हैं और (फिर) उनको मोहलत भी न मिलती[2](8) हम ही ने इस उपदेश (पत्र) को उतारा है और बेशक हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं[3](9) हम आप से पहले भी पिछलों के विभिन्न समुदायों में पैगम्बर भेज चुके हैं(10) और जब जब उनके पास कोई पैगम्बर आया तो उसका मजाक उड़ाते रहे(11) अपराधियों के दिलों में हम इसको इसी प्रकार जारी कर देते हैं[4](12) वे इस (कुरआन) पर ईमान लाने वाले नहीं और पहलों का भी यही व्यवहार रहा है(13) और अगर हम उनके लिए आसमान की ओर कोई दरवाजा भी खोल दें फिर वे उस पर सारे दिन चढ़ते रहें(14) तो निश्चित रूप से यही कहेंगे कि हमारी नजरबंदी कर दी गई है बल्कि हम लोगों पर जादू चल गया है(15) और आसमान में हमने बुर्ज (तारा–समूह) बनाए और देखने वालों के लिए उनको सुंदर बनाया(16) और उनकी हमने हर फिटकारे हुए शैतान से रक्षा की(17) हाँ जिसने भी चोरी से सुना तो आग के एक चमकदार गोले ने उसका पीछा किया[5](18)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यानी तुम वही तो हो जिनकी निर्भय जबानें यह कहते नहीं थकती थीं कि हमारी प्रतिष्ठा व वर्चस्व को पतन नहीं, हालांकि तुम उन बस्तियों के आस–पास रहते थे जहां कैसे–कैसे इज़्ज़त वाले खाक में मिल गये, इतिहास की खबरों और बयानों से तुम्हें उनके हालात का ज्ञान भी था कि हम उनको कैसी–कैसी सजाएं दे चुके हैं, फिर भी हमने पिछली कौमों की कहानियां पवित्र कुरआन में भी सुनाईं ताकि तुम सबक लो, लेकिन तुम अपनी ज़िद पर जमे रहे।

2. इस्लाम के इन दुश्मनों ने तो इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने के लिए हर जमाने में कोई कसर न छोड़ी लेकिन अल्लाह का वादा है कि सच्चाई कायम रहेगी, साजिशें ऐसी थीं कि पहाड़ उनसे टल जाते लेकिन सत्य कायम रहा और कायम रहेगा, और अल्लाह के इन दुश्मनों को उस दिन पता चल जाएगा जब दुनिया दूसरी होगी और अल्लाह के नज़दीक इस दुनिया की उम्र ही क्या, पूरी दुनिया मिट जाने के बाद जो हिसाब चुकाया जाएगा वह भी अल्लाह के यहां कुछ देरी नहीं, इसीलिए इसको सरीउल हिसाब (जल्द हिसाब लेने वाला) फरमाया और इसमें ईमान वालों को तसल्ली भी हो गई कि अगर यहां दुश्मनों को सजा नहीं मिलती तो जरूरी नहीं, उनके लिए असल सज़ा की जगह आख़िरत है।

3. क़यामत में जब अल्लाह का इनकार करने वालों के लिए हमेशा आग में रहने का फैसला कर दिया जाएगा तो वे कामना करेंगे कि काश उन्होंने सच्ची बात जान ली होती, फिर आगे एक ओर ईमान वालों को तसल्ली दी जा रही है कि अगर वे नहीं मानते तो उनको दुनिया में मस्त रहने दो आगे उनको सब मालूम हो जाएगा और दूसरी ओर ईमान वालों को यह निर्देश भी दिया जा रहा है कि वे दुनिया के ऐश व आराम को सब कुछ न समझें, जब भी उसमें अधिकता पैदा होती है उसका परिणाम असावधानी के रूप में सामने आता है।

4. यह अल्लाह की ओर से फरिश्ते उतारने की मांग का उत्तर है और कहा जा रहा है कि फरिश्ते हम उसी समय उतारते हैं जब हम अजाब लाते हैं, उसके बाद फिर मोहलत नहीं मिलती।

शेष पृष्ठ...11...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

झुकाव और शिष्टाचार अपनाने का बयानः-

अल्लाह के रसूल सल्ल० के उच्च शिष्टाचारः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे बेहतर अख्लाक (उच्च व्यवहार) वाले थे, हुजूर सल्ल0 की हथेली से ज़्यादा नर्म और दीबाज रेशम भी नहीं मालूम हुआ, न ही हुजूर सल्ल0 की खुशबू से बढ़ कर मैंने कोई खुशबू सूंधी, मैंने दस साल अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में गुजारे हैं, इस दौरान मुझे उफ् तक न कहा, न मेरे किसी काम के बारे में कहा कि तुम ने क्यों किया? और अगर किसी काम को नहीं किया तो यह नहीं फरमाया कि यह क्यों नही किया?

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि मदीने की एक मामूली औरत अल्लाह के रसूल सल्ल0 का हाथ पकड़ लेती और जिधर चाहती ले जाती। (बुखारी)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि वह बच्चों के पास से गुजरे तो उन्हें सलाम किया, और फरमाया कि यह हुजूर सल्ल0 की आदत थी।

(बुखारी व मुस्लिम)

भलाई और बुराई का अन्तरः—

हज़रत नवास बिन समआन रज़ि० कहते है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से नेकी और गुनाह के बारे में पूछा— आप सल्ल0 ने फरमायाः नेकी अच्छे स्वभाव को कहते हैं और गुनाह हर वह बात है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम यह नापसन्द करो कि उसके बारे में लोग जान लें। (मुस्लिम)

अच्छे स्वभाव का महत्वः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल—आस रज़ि० बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 न कोई बुरी बात जबान पर लाने वाले थे और न जबरन ही ऐसा करते थे, और आप फरमाया करते थे, तुम में सबसे बेहतर वह है जिसके व्यवहार सबसे बेहतर हों।

(बुखारी व मुस्लिम)

गंदी बात करने वाले को अल्लाह पसन्द नहीं करताः—

हज़रत अबू दर्दा रज़ि० बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमायाः कयामत के दिन मुसलमानों के तराजू में अख्लाक (शिष्टाचार) से ज़्यादा बढ़ कर कोई और अमल न होगा। अल्लाह गंदी बात करने वाले को पसन्द नहीं करता है।

(तिर्मिजी)

जन्नत और जहन्नम में ले जाने वाला अमलः—

हज़रत अबू हुरैरः रजि० ने फरमायाः कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 से पूछा गया, कौन सा अमल लोगों को जन्नत में ले जाएगा? आप सल्ल0 ने फरमायाः अल्लाह का डर और अच्छा व्यवहार, फिर पूछा गया कौन सा अमल लोगों को जहन्नम में ले जाएगा? आप सल्ल0 ने फरमायाः जुबान और शर्मगाह।

(तिर्मिजी)

सबसे बेहतर वह है जो घर वालों के लिये बेहतर होः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः मुकम्मल ईमान वाला आदमी वह है जिसके व्यवहार सब से अच्छे हों और तुम में सब से बेहतर वह आदमी है जो अपनी बीवी के लिये सबसे बेहतर हो।

(तिर्मिजी)

❖❖❖

आह! मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी रह0

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

नाज़िरे आम नदवतुल उलमा मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी रह0 15 जनवरी 2025, रात 8:30 बजे शहर रायबरेली में एक सड़क दुर्घटना में शहीद हो गये, ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' मौलाना की इस अचानक मौत की ख़बर से नदवतुल उलमा और उससे सम्बन्धित मदारिस व मकातिब और मुल्क के दीगर इल्मी व दीनी हलक़ों में ग़म की लहर दौड़ गई, मौलाना मरहूम, मुरशिदे मिल्लत भूत पूर्व नाज़िम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी के भतीजे और दामाद थे, और भूतपूर्व मोतमद तालीमात नदवतुल उलमा, और अरबी के प्रसिद्ध साहित्यकार और लेखक मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी के लायक़ और सआदत मन्द बेटे थे।

मौलाना जाफ़र मरहूम का जन्म दिसम्बर 1960 को तक़या, रायबरेली, उत्तर प्रदेश में हुआ, मरहूम ने प्रारंभिक शिक्षा अपने वतन रायबरेली में प्राप्त की, उसके बाद दारुलउलूम नदवतुल उलमा में दाख़िला लिया और उलूम शरइया के साथ अरबी भाषा और साहित्य में योग्यता प्राप्त की, नदवतुल उलमा, लखनऊ से 1981 में आलमियत और 1983 में फ़ज़ीलत की सनद हासिल की, उसके बाद 1986 में लखनऊ युनिवर्सिटी से अरबी भाषा व साहित्य में एम0ए0 किया, और 1990 में सऊदी अरब के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय "जामिअतुल मलिक सऊद'' के अन्तर्गत टीचर ट्रेरिंग का कोर्स पूरा किया। आपने अपने व्यवहारिक जीवन को दर्स तदरीस पाठ पठन से शुरु किया, इस समय भी वह पाठ पठन के साथ नदवतुल उलमा में महत्वपूर्ण पद पर ''नाज़िरे आम'' के तौर पर अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी लगन और मेहनत के साथ निबाह रहे थे। कुदरत ने मरहूम को बड़ी विशेषताएं और योग्यताएं प्रदान की थीं, जिसकी वजह से बड़ी उम्मीदें वाबस्ता थीं, यह ख़्याल हो रहा था कि भविष्य में नदवतुल उलमा जैसी संस्था और मिल्लते इस्लामिया हिन्दिया के लिए वह बहुत लाभदायक साबित होंगे, और उनकी संरक्षता में नई नस्ल की अच्छी तालीम और तरबियत होगी, लेकिन अल्लाह का फ़ैसला अटल है जिसके सामने हर ईमान वाले का सर झुक जाता है, हम कुरआन की ज़बान में यही कहेंगे ''मैं अपने दुःख–दर्द की फ़रियाद केवल अल्लाह से करता हूँ और अल्लाह की ओर से मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते'' मौलाना समाज के हर वर्ग में प्रिय और हर दिल अज़ीज़ थे, जो उनके पास जाता सन्तुष्ट हो जाता। मौलाना के मिज़ाज़ में ख़ानदानी शराफ़त और सआदत बहुत नुमायां थी, मौलाना के व्यक्तित्व में एक आकर्षण था और वह लोगों की निगाहों में बड़े प्रिय थे, जिसका मन्ज़र उनके जनाज़े में देखने को मिला, हज़ारों की संख्या में लोग उनके जनाज़े में शिरकत करने आये, मदारिस के उलमा और तल्बा के अलावा आम जनमानस की बहुत बड़ी भीड़ थी। मरहूम की नमाज़े जनाज़ा नाज़िम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना बिलाल हसनी नदवी ने पढ़ाई और तदफ़ीन पैतृक कबरिस्तान दायरा शाह अलमुल्लाह तकिया रायबरेली में हुई। कई रोज़ गुज़रने के बावजूद बैंग्लूर, दिल्ली, लखनऊ, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी, फैजाबाद, बस्ती, गोण्डा, सीतापुर, गाज़ीपुर, कानपुर, बाँदा, अलीगढ़ आदि जगह जगह शोक सभाएं और ताज़ियती जलसे

हो रहे हैं, जिसकी सूचना अख़बारों से मिल रही है। निःसंदेह अल्लाह के यहाँ मरहूम का बड़ा मुक़ाम है।

मरहूम मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी अपने पीछे बेवा के अलावा तीन बेटे और एक बेटी छोड़ कर गये हैं, अल्लाह उन सबकी हिफ़ाज़त फ़रमाए और उन बच्चों को मरहूम के लिए बेहतरीन सदक़ा जारिया बनाये।

ताज़ियती जलसों और शोक सभाओं में मौलाना मरहूम को जिन बलन्द शब्दों में याद किया गया और उनको जो ख़राजे अक़ीदत पेश किया गया उसकी झलकियाँ आप भी देख लें ताकि इसका अन्दाज़ा कर सकें कि कितनी अक़ीदत व मुहब्बत थी लोगों को मौलाना मरहूम से।

''ख़ानवादए मौलाना अबुल हसन अली मियाँ हसनी नदवी से एक और शख़्सियत रुख़सत हो गई यानी सुवालिहीन के शजरे तूबा की एक शाख़ और गिर गई या एक इल्मी चमनिस्तान की एक कली और मुरझा गई, मौत बेशक बरहक़ है और अपने वक़्त ही पर आती है लेकिन अचानक इस तरह की मौत बड़े सदमे का सबब बन जाती है, उनकी कमी बहुत अरसे तक महसूस की जाएगी, उनकी सादगी बे लौसी और हालाते हाज़िरा पर गहरी नज़र उनकी फ़िक्रमन्दी की अलामत थी, ख़ुद साहिबे इल्म थे और अहले इल्म से बड़ी मुहब्बत करते थे, विभिन्न समाजी और सियासी लोगों ने ताज़ियत पेश करते हुए कहा कि आप बड़े बाअख़लाक़ और अपने बड़ों का अदब करने वाले और छोटों पर शफ़क़त करने वाले थे, आपका तर्ज़े ज़िन्दगी बहुत सादा, क़लम तवाना, तर्ज़ निगारिश साफ़, शुस्ता और शगुफ़्ता थी, मरहूम ने बहुत सारी किताबें तसनीफ़ कीं, नदवतुल उलमा से निकलने वाले पन्द्रह रोज़ा अरबी जरीदा ''अल राइद'' के मुदीरे आला थे।

मौलाना मरहूम के इन्तिक़ाल से नदवे ही का नहीं बल्कि मिल्लत का नुक़सान हुआ, मरहूम नदवतुल उलमा को उन बलन्दियों तक पहुँचाने की संजीदा कोशिश करते रहे, जिन बलन्दियों का ख़्वाब उनके अकाबिरीन ने देखा था।

दारुल उलूम नदवतुल उलमा की मस्जिद में मोतमद माल मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी की अध्यक्षता में ताज़ियती जलसा आयोजित हुआ, जलसे का आग़ाज़ दारुल उलूम के उस्ताज़ क़ारी अब्दुल्लाह खाँ साहब की तिलावते कलाम पाक से हुआ, नाज़िमे जलसा मौलाना अलाउद्दीन नदवी ने फ़रमाया मौत एक ऐसी हक़ीक़त है जिसका कोई इनकार नहीं कर सकता और हर एक को इस मरहले से गुज़रना है, लेकिन एक आलिम की मौत पूरी दुनिया की मौत है, मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी इसके मुसतहक़ थे। मौलाना ख़ालिद ग़ाज़ीपुरी नदवी ने फ़रमाया ''मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी एक अलग विशेषता के इनसान थे हर एक से मुहब्बत से मिलते थे और एख़लाक़ के साथ काम करते थे, खानवादए हसनी एख़लास का पैकरे मुजस्सम है'' शेख़ुल हदीस मौलाना मु0 जकरया संभली नदवी ने फ़रमायाः मौलाना मु0 जाफ़र हसनी नदवी के जाने से नदवे का बड़ा नुक़सान हुआ, अल्लाह तआला से दुआ है कि इस ख़ला को पुर करे, उन्होंने मौलाना मरहूम की विशेषताओं और ख़िदमात पर रोशनी डाली, मोतमद माल डॉ0 मुहम्मद असलम नदवी सिद्दीक़ी ने फरमायाः मौलाना मु0 जाफ़र हसनी नदवी रह0 की शख़सियत शफ़कत दिल नवाज़ी, ख़ुलूस का पैकर थी, उनके यहाँ तसन्नो, तकल्लुफ़ नाम की कोई बात नहीं थी, उनकी तरवियत ख़ानदान के बलन्द पाया उलमा
के ज़ेरे साया हुई।

मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी मरहूम की सादगी और ख़ुश अख़लाक़ी यह दो सिफ़तें इतनी नुमायाँ थीं कि जो एक बार भी मिलता वह मुतास्सिर ज़रूर होता।

''ख़ुदा रहमत कुनद ईं आशिक़ाने पाक तीनत रा''

समस्त पाठकों से दुआए मग़फिरत की दरख़्वास्त है।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

द्वेष व घृणा:-

बुग्ज व कीना (द्वेष व घृणा) दिल में दुश्मनी का जो बीज पड़ जाता है अगर उसको निकाला न जाए तो ये बुग्ज व कीना (द्वेष व घृणा) का रूप ले लेता है, ये बात इंसानी मनोविज्ञान में दाखिल है कि अगर एक इंसान को दूसरे इंसान से तकलीफ पहुँचती है तो उसके दिल में एक तरह की द्राड़ पड़ जाती है, अगर उसको दूर न किया जाए तो ये द्वेष व दुश्मनी की शक़्ल में एक खाई बन जाती है कि उसको पाटना मुश्किल हो जाता है, इसीलिए ये हुक्म है कि अगर किसी से नाराजगी हो गई और दिल में द्राड़ पड़ गई तो फौरन उसको दूर कर लिया जाए ताकि बात आगे न बढ़ने पाए, और ऐसी सूरत न बनने पाए कि दिलों का मिलना मुश्किल हो जाए।

इस्लाम में जो चीज़ बहुत ही न पसंदीदा है वो दिलों का तोड़ और उसके नतीजे में द्वेष (बुग्ज) और दुश्मनी का सिलसिला है कि फिर वो ख़त्म नहीं होता, और वहीं से फिर आपस की लड़ाईयां शुरू हो जाती हैं, जो कभी कभी इतनी आगे बढ़ जाती हैं कि एक आदमी दूसरे के ख़ून का प्यासा हो जाता है, और मुकदमा करना, दूसरे को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करना एक आम बात बन जाती है, ये इस वक्त मुसलमानों की आम बीमारी है, इसमें कभी कभी अच्छे अच्छे दीनदार भी लिप्त हो जाते हैं और फिर पूरा समाज बिखराव का शिकार हो जाता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अच्छा व खूबसूरत समाज गठित किया, और उन तमाम बुराइयों से रोका जो समाज को बिगाड़ने वाली हैं, हसद के चैप्टर में वो हदीस गुजर चुकी है जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन तमाम चीजों से रोका है, उस में ये अलफाज भी हैं कि–

अनुवादः– "एक दूसरे से बुग्ज (द्वेष) मत करो, और एक दूसरे को बे सहारा मत छोड़ो और अल्लाह के बन्दो! आपस में भाई भाई बन के रहो"।

(बुखारी शरीफः 6066)

अल्लाह तआला ने सूरह हश्र में जहां मुहाजिरीन और अंसार हजरात की तारीफ़ की और उसके बाद उनके रास्ते पर चलने वालों का जिक्र किया तो उनकी इस खूबी का जिक्र किया कि वो ये दुआ करते हैं–

अनुवादः– "और जो उनके बाद आये, वो ये दुआ करते हैं कि ऐ हमारे रब! हमारी मगफिरत फरमा और हमारे उन भाइयों की मग़फ़िरत फरमा जो ईमान में हम से आगे गए और ईमान वालों के बारे में हमारे दिलों में कुछ भी कपट न रख, यक़ीनन तू बड़ा मेहरबान, बहुत ही रहम करने वाला है"।

(अल–हश्रः 10)

बुग्ज़ व कीना ऐसी बुरी हरकत है कि आम मगफिरत के वक़्त भी कीना रखने वाले लोग इस से महरूम कर दिये जाते हैं, कई हदीसों में आता है कि हर सोमवार और जुमेरात को इंसानों के आमाल पेश किये जाते हैं तो जिस ने खुदा के साथ शरीक़ नहीं किया उस को मॉफ़ किया जाता है, लेकिन जिन दो आदमियों में कीना रहा है तो अल्लाह तआला फरमाता है कि इन दोनों को अभी रहने दो, मेल कर लें।

अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी (रह०) ने इसकी तशरीह में एक हदीस और पेश की है, जो "तबरानी" की है, जुमेरात और सोमवार को आमाल पेश किये जाते हैं, जिसने मग़फ़िरत मांगी हो उसको मग़फ़िरत दी जाती है, जिसने तौबा की होती है उसकी तौबा कुबूल की जाती है, लेकिन कीना रखने वालों के आमाल उनके कीना की वजह से लौटा दिए जाते हैं, जब तक वो उस को छोड़ न दें।

कभी अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने किसी की शिकायत होती तो आप फरमाते कि मेरे सहाबा की मेरे सामने शिकायत मत करो, मैं नहीं चाहता कि मैं किसी से इस हाल में मिलूँ कि मेरे दिल में उसके बारे में मैल हो।

(अबू दाऊदः 4862)

अतः एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हजरत अनस (रज़ि0) से फरमाया, जिन्हों नें 10 साल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की थी–

अनुवादः– "बेटे! अगर तुम्हारे बस में हो कि तुम सुबह व शाम इस हाल में करो कि तुम्हारे दिल में किसी के बारे में मैल न हो तो ऐसा ज़रूर करो, इसलिए कि ये मेरा तरीका है और जो मेरा तरीका पसंद करता है वो मानो मुझसे मुहब्बत करता है और जो मुझ से मुहब्बत करेगा वो जन्नत में मेरे साथ होगा।

दिल में किसी के लिए मैल आ जाना, खोट पैदा हो जाना भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसंद नहीं था, कीना कपट पैदा होना तो दूर की बात, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहाँ तक फरमा दिया की तीन लोगों की बख़्शिश नहीं, उनमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका भी जिक्र फरमाया जो अपने भाई से कीना रखता है। (बुखारीः 411)

❖❖❖

पृष्ठ ...06...का शेष

5. जिक्र का मतलब पवित्र कुरआन है, पहले किताबें उतरीं लेकिन उनकी रक्षा उनकी कौनों के जिम्मे की गई जिसको उन्होंने पूरा नहीं किया, पवित्र कुरआन आखिरी किताब है इसको क़यामत तक रहना है, इसलिए इसकी रक्षा का वादा अल्लाह ने खुद किया है। इसी का परिणाम है कि आज लाखों छोटे–छोटे बच्चों के सीने में यह मार्गदर्शक पुस्तक सुरक्षित है, दुनिया की शक्तियां जो भी उपाय कर लें लेकिन न वे पवित्र कुरआन को मिटा सकीं है और न कभी मिटा सकेंगी।

6. उनकी जिद की वजह से न मानने को उनके दिल में जारी कर दिया, वे कुछ भी निशानी देख लें आसमान तक चढ़ जाएं लेकिन वे ईमान लाने वाले नहीं।

7. बुर्ज किले को कहते हैं इससे आशय यहां पर सितारे हैं, संभवतः बुर्ज उनको इसलिए कहा गया है कि उनमें अधिकतर अपनी काया में इस संसार से सैकड़ों गुना बड़े हैं, पवित्र कुरआन में जहां आसमान का उल्लेख होता है वहां कभी सातों आसमानों में से कोई आसमान से आशय होता है और कभी उसका आशय आसमान की दिशा होती है, ऐसा लगता है कि यहां यही मतलब है कि आसमान की दिशा को हमने सितारों से सुसज्जित कर रखा है, शैतान हमेशा प्रयास करते रहते हैं कि आसमानी फैसलों को चोरी–छिपे सुनें और अपने दोस्तों को बताएं, अल्लाह ने उनको हमेशा से सुरक्षित बनाया है, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैगम्बर बनाए जाने के समय से इसको और मजबूत कर दिया गया है, और अगर कोई सुनने का प्रयास करता है तो उस पर गोले बरसते हैं, उनमें वे जो आधी–अधूरी बातें कभी सुन लेते हैं वह ज्योतिषियों और काहिनों को बताते हैं। ◆◆

हमारी नाकामी के असबाब

मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी (रह0)
दिसम्बर 1960–जनवरी 2025

आज बात शुरू करते हैं एक मुकालमे (बातचीत) से, मुकालमा आज का नहीं 1923 ई0 का है, जब यूरोप जिंसी अनारकी (यौन अराजकता), अख़्लाक़ी बेराहरवी और नग्नता व फहशाही की उन हदों तक नहीं पहुंचा था जिन हदों को वह आज छू रहा है। जालिमाना मिजाज तो उसका पहले भी था, खून के दरिया तो उसने पहले भी बहाए, लाशों के अंबार तो उसने पहले भी लगाए और आज भी उसकी दरिन्दगी, सफ़्फ़ाक़ी और खूंरेजी का यह सिलसिला क़ायम है, आज भी जब उधर से हवा चलती है तो जिस्मों की बू और बहते लहू की रंगत लिये होती है।

यह मुकालमा एक फ्रांसीसी बाशिन्दे और एक चीनी सैय्याह के बीच उस वक्त पेश आया जब वह हकीकत पसंद और साहिबे फिक्रो नजर चीनी सैय्याह यूरोप की खुदगर्जी, बेराहरवी, जखीरा अंदोजी, खुदा फरामोशी और नफ़्सानी ख्वाहिशात की तकमील के वह मंजर देख कर आया जो हजरत ईसा (अलैहिस्सलाम) की तालीमात से कोई जोड़ नहीं रखते थे। इसीलिए उसने पूरी सच्चाई और हकीकत पसंदी के साथ अपने ईसाई दोस्त को मुखातिब करते हुए कहाः

''मैंने पूरा यूरोप देखा, उसकी माद्दी तरक्कियों ने मेरी आंखों को खीरा कर दिया, लेकिन जब मुझे यह ख़्याल आया कि यह लक–ओ–दक इमारत किसी मजबूत और मुस्तहकम बुनियाद पर कायम नहीं है तो मुझे यकीन हो गया कि इसकी बर्बादी के दिन बहुत करीब हैं। मैंने इस मुल्क में नफ़्स परस्ती, माद्दा परस्ती, दौलत परस्ती, मतलब परस्ती, ऐश परस्ती, अनानियत परस्ती और हवस परस्ती के वह मंजर देखे जो उसके नबी मसीह (अलैहिस्सलाम) की तालीमात के यक़्सर ख़िलाफ़ थे, वह मजहब जिसकी तालीम यह है कि लोग एक–दूसरे से मुहब्बत करें, एक–दूसरे की मदद करें, अगर कोई उसके एक गाल पर थप्पड़ मार दे तो वह उसकी तरफ अपना दूसरा गाल भी फेर दे, वह मजहब जिसकी तालीम यह है कि लोग कल का ख्याल न करें, जखीरा अंदोजी से बचें, कल के लिए कुछ जमा न करके रखें और कनाअत को अपना सरमाया समझें, उसके पैरोकार आज सबसे ज़्यादा लालची, सबसे ज़्यादा खुदग़र्ज, सबसे ज़्यादा दौलत के हरीस, सबसे ज़्यादा इन्सानी मूल्यों के खिलाफ, व्यक्तिगत फायदे के लिए बेक्रार, लज़्ज़त व राहत के सबसे ज्यादा दिलदादा और सबसे ज़्यादा इन्तिकाम पसंद वाकेअ हुए हैं।''

इस मुकालमे से जहां यूरोप के जवाल की उम्मीदों के चिराग जलते हैं, अफ़सोस वहीं मुस्लिम समाज की जबूहाली देख कर इस्लामी तहजीब, इस्लामी रहन सहन, इस्लामी आदाब, इस्लामी अख़्लाक, इस्लामी सीरत और इस्लामी शरीअत से उनकी दूरी देखकर उम्मीदों के उन चिरागों की लौ धीमी होने लगती है और दिल में यह सोचकर एक मायूसी की लहर दौड़ जाती है कि अगर यूरोप की तबाही व बर्बादी के रास्ते पर पड़ जाने की वजह यह है कि उसका समाज दीने मसीह की तालीमात के मुताबिक़ नहीं, वहां का तर्जे जिन्दगी शरीअते ईसवी के मुताबिक नहीं, उसके मामलात, तौर–तरीक, रहन–सहन, खुदाई कानून के मुआफिक नहीं तो क्या इस्लामी दुनिया का मौजूदा समाज कुरूने अव्वल के मदनी मुआशरे से कोई मेल रखता है? क्या अकीदे की जमानत ली जा सकती है? क्या मामलात के सिलसिले में इत्मिनान का इजहार किया जा सकता है? क्या मौजूदा अख़्लाक को इस्लामी अख़्लाक का नमूना करार दिया जा सकता है? क्या तर्जे जिन्दगी को सुन्नत व शरीअत के मुताबिक

माना जा सकता है? क्या हमारी तिजारत इस्लामी उसूल पर पूरी उतरती है? क्या हमारी खेती इस्लामी शर्तों को पूरा करती है? क्या विरासत और तरका की तक़्सीम इस्लामी फिक्ह की बुनियाद पर होती है? अक्सरियत को पेशेनज़र रखते हुए यकीनन आपका जवाब होगा, नहीं–नहीं!

हमारे नबी (सल्ल0) ने उम्मत को जो रास्ता दिखाया और उसके लिए जो हिदायत नामा जारी फरमाया, उम्मती होने के दावेदार हम में से कितने लोग हैं जो इस हिदायत नामे की रोशनी में अपनी जिन्दगियां गुजारते हैं? आका–ए–दो आलम (सल्ल0) की शान में गुस्ताख़ी पर गम व गुस्से का इज़हार बजा बल्कि गैरत, खुददारी और इश्के नबी (सल्ल0) का लाजमी तकाजा है, अगर हमारे दिलों में हुजूर पाक (सल्ल0) की मुहब्बत और जांनिसारी का जज्बा नहीं तो फिर हमारा ईमान भी सलामत नहीं, क्योंकि आप (सल्ल0) का इरशाद है–

''तुममें से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको उसके मां–बाप, औलाद और आम लोगों से ज़्यादा महबूब न होऊं।''

लेकिन अगर आपकी हिदायात को छोड़ करके जाते रिसालत की तौहीन का मुरतकिब खुद हुआ जाए? आप (सल्ल0) के लाए हुए कानून की खिलाफ वर्जी करके बागियों की सफ में खुद शामिल हुआ जाए? तो गुस्सा किस पर उतरना चाहिए और नाराज़गी किसके ख़िलाफ़ होनी चाहिए? ज़बाने नुबूव्वत तो यह कहती है कि मोमिन वह है जो अपने भाई के लिए वही पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है। मुस्लिम वह है जिसकी जबान और हाथ से किसी मुसलमान को तकलीफ न पहुंचे। हसद से बचो, हसद नेकियों को इस तरह खा जाती है जैसे आग लकड़ी को। बदगुमानी से बचो बदगुमानी गुनाह है। सूद खाने वाला और खिलाने वाला दोनों पर अल्लाह की लानत है। खुदा की कसम वह मोमिन नहीं जिसकी शरारतों से उसके पड़ोसी महफूज न हों, जुल्म से बचो, हिस्र व बुख्ल से बचो, हिस्र और बुख़्ल ने तुमसे पहले कौमों को हलाक़ किया और उनको इस बात पर आमादा किया कि वह अपना खून बहाएं और हराम काम जाएज कर लें। कामिल तरीन ईमान उसका है जिसके अख़्लाक सबसे अच्छे हों। जब तुम सालन पकाओ तो शोरबा ज़्यादा कर दिया करो और हमसाया का ख़्याल करो। मोमिन की मिसाल उनकी आपसी मुहब्बत, रहमदिली और मेहरबानी में जिस्म की तरह है, जब उसका कोई अंग बीमार होता है तो सारा जिस्म जागता है और उसको बुखार आ जाता है।

क्या हमारा तर्जे अमल इन हिदायतों के मुताबिक है? क्या हम एक–दूसरे की तकलीफ महसूस करते हैं? क्या किसी मुसलमान की कराह हमारे दिल को तड़पाती, हमारी आंख को रुलाती और हमारी नींद उड़ाती है? क्या हमारी मजलिसें इल्जाम तराशी, ऐब जोई, किरदार कुशी और गीबत जैसी घिनावनी हरकतों से पाक रहती हैं?

आज पड़ोसी–पड़ोसी से क्यों नाराज है? हमारा मुआशरा गिरोही अस्बियत का क्यों शिकार है? दिलों में हसद और आंखों में नफरत की आग क्यों सुलग रही है? फ्रेबदेही, धोखाधड़ी और जालसाजी के वाक्यात हमारे मुआशरे में क्यों पेश आ रहे हैं, खानदानी रंजिशों, शौहर बीवी के झगड़ों, बाप और बेटों के दरमियान तल्खियों ने वबाई शक़्ल क्यों अख्तियार कर ली है? इंसाफ़ व फिजूल खर्ची के मंजर गरीब मुसलमानों को महरूमी का एहसास क्यों दिला रहे हैं और शिकस्त व रेख़्त और जिल्लत व रुस्वाई और नाकामी हमारा पीछा क्यों नहीं छोड़ रही है?।

वजह इसकी सिर्फ यह है कि हमारा रहन सहन शरीअत के ताबेअ नहीं है और हमारी ख्वाहिशात तालीमाते नबवी (सल्ल0) की पाबन्द नहीं और जब तक हमारी मुआशरत शरीअत के ताबेअ न हो और मुस्लिम

शेष पृष्ठ ...20...पर

आओ दिलों को जोड़ें

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

ह़ज़रत निजामुद्दीन औलिया के यहाँ एक प्रसंशक उपहार स्वरूप कैंची ले आया, ह़ज़रत निजामुद्दीन ने कहा, मुझे कैंची की जरूरत नहीं, मेरा काम काटना–फाड़ना नहीं। अगर देना है तो सूई लाकर दो क्योंकि मैं दिलों को सीता और जोड़ता हूँ,कैंची तो काटने और फाड़ने की चीज है और सूई जोड़ने और मिलाने की।

सच्ची बात तो यही है कि आजकल कैंचियाँ ही कैंचियाँ चल रही हैं जो निर्दोषों के जिस्मों को फाड़ और दिलों को चीर रही हैं,जिसे देखो कैंचियाँ लेकर आफत मचाये हुए है, मगर कोई सूई लेकर टूटे हुए दिलों की रफूगरी नहीं कर रहा है,कोई दिलों को सी नहीं रहा है।दरअसल लोग अपने इंसान होने का मतलब ही भूल चुके हैं, पहले कहा जाता था कि शैतान ने वरगला दिया मगर अब तो लोग ही शैतान बन बैठे। जहां कहीं भी उन्हें धर्म के कथित खतरे की सुगबुगाहट सुनाई दी, लाठी–डंडा उठाया और चल पड़े तथा धर्म योद्धा कहलाने की ललक में दो–चार को पीट कर या जान से मारकर आ गए, जब तफ़्तीश हुई तो पता चला कि जो मारे गए वह तो निर्दोष थे। दरअसल लोग कौवा कान ले गया के क्रियात्मक उदाहरण बन चुके हैं, पॉवर के नशे में कुछ सुझाई ही नहीं देता कि जिनको मारा गया वह भी किसी की मां का लाल होगा, किसी का पिता या पति होगा, कोई कितना तड़पा होगा, कोई कितना रोया होगा, कितनी आहें निकली होंगी, कोई सुधबुध खो बैठा होगा, कोई शून्य में निहार रहा होगा क्योंकि सब कुछ खत्म जो हो गया।

सब कुछ दिल ही से है जब दिल ही भेड़ियों जैसा हो गया तो सद्भावना और मानवता की बातें उसे चुभेंगी बल्कि अब तो कइयों के दिल, दिल कम पत्थर के सिल ज़्यादा बन चुके हैं लेकिन इन सबके बावजूद हमें निराश नहीं होना चाहिये क्योंकि हमारा इतिहास मुहब्बत की कहानियों से अटा पड़ा है, खून के छींटे उड़ाने वाले कुछ ही होंगे मगर प्रेम की गंगा बहाने वाले बहुत हैं, कुछ लोग भले ही नफरत की खेती करके लोगों के पेट में दुश्मनी का लुकमा देना चाहते हों मगर इस लुकमे से देश को बचाने की जद्दोजहद करने वालों की आज भी अधिकता है।

सीधी सी बात है कि ईश्वर/अल्लाह में आस्था रखने वाले ये मानते हैं कि सभी एक माता–पिता के संतान हैं मगर अजीब बात है कि जहाँ कहीं भी धर्म खतरे में है का नारा लगा तो लोग एक माता–पिता वाली आस्था भूल कर एक दूसरे का गला काटने दौड़ पड़ते हैं,जब आंख खुलती है और होश आता है तो पता चलता है कि उसने अपने भाई–पिता,बहन–मां को ही मार डाला,अपने दोस्त की ही गर्दन रेत दी, दंगों में विश्वास और भरोसे का ऐसा कत्ल होता है कि दशकों इस सदमे से उबरने में लग जाते हैं।

यदि एक दंगा खून की नदियां बहाने के लिये है तो जरूरत है कि कई गंगा प्रेम, भरोसा, त्याग और अनुराग की बहाई जाय जिसमें डुबकी लगाकर इंसान, इंसान बन कर इंसानों के साथ इंसानों जैसा सुलूक करे और खून की बहती नदी को सुखाकर उसमें मानवता और सद्भावना के फूल खिलाये।

ये दुनिया एक कुम्हार अर्थात रब/ईश्वर की बनाई हुई है, कुम्हार की तरह उसे भी पसंद नहीं है कि इंसान के रूप में उसने जो माटी के पुतले बनाये हैं उसे कोई तोड़े–फोड़े, कोई मजाक उड़ाए। मशहूर किस्सा है कि एक कवि की चर्चा दूर तक फैली तो लोग उससे मिलने आये,देखा तो

कवि काला भुजंग था, वह लोग देखकर हंसने लगे तो कवि ने कहा ''बर्तन पर हंस रहे हो या बर्तन बनाने वाले पर?"।

लड़ाई–झगड़े के कारणों में किसी को हेय दृष्टि से देखना, अपने को उच्च समझना अपने धर्म–समुदाय, अपनी विचारधारा और विचार को सबसे बढ़िया समझकर किसी से दोयम दर्जे का व्यवहार करना आदि है, समाज इन सब बातों से निजात पा जाए तो सद्भावना और मानवता की ठंडी बयार बहाई जा सकती है,उसके लिये जरूरी है कि एक दूसरे से मिलना–जुलना किया जाय, एक दूसरे पर भरोसा जताया जाय, एक दूसरे के लिये स्पेस पैदा किया जाय, एक दूसरे के सुख–दुख में शामिल हुआ जाय तो यकीनन एक दिन देश की ऐसी तस्वीर पूरी दुनिया में सबसे अच्छी तस्वीर बन सकती है बशर्ते कि हम सब इसकी कोशिश करें।

हमारा मानना है कि इंसानियत एक ऐसा एहसास है जो हमारे जीवन में बहुत मायने रखता है वह एक ऐसी भावना है जो हमें एक दूसरे के प्रति सहानुभूति और समर्थन की ओर उभारती है। इंसानियत हमें यह याद दिलाती है कि हम सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं और हमें एक दूसरे के प्रति प्यार,करुणा और सहानुभूति की भावना रखनी चाहिए।

इंसानियत एक अनमोल धरोहर है जो हमें इंसान होने का एहसास दिलाती है इसलिए हमें इंसानियत के मूल्यों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। इंसानियत जो दया और प्रेम का प्रतीक है, किसी भी समाज की सबसे बड़ी ताकत और उसकी जरूरत है। यह वह मूलभूत मूल्य है जो समाज को एकजुट करता है और उसे शांति, सहयोग और प्रगति की ओर ले जाता है।

इंसानियत का अर्थ है दूसरों की मदद करना, बिना किसी स्वार्थ के दया और करुणा दिखाना। यह जाति, धर्म, भाषा या सामाजिक स्तर से परे जाकर हर इंसान के प्रति सम्मान और सहानुभूति का भाव रखता है। इंसानियत समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों को जोड़ने का काम करती है। जब लोग एक–दूसरे के प्रति सहानुभूति और सहयोग का भाव रखते हैं तो समाज में एकता और शांति का माहौल बनता है। जब समाज के लोग ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं तो हर व्यक्ति को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है और वह समाज को आत्मनिर्भर व प्रगतिशील बनाता है। इंसानियत के मूल्यों को अपनाने से हर व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रता का सम्मान होता है। यह समाज में भेदभाव और असमानता को कम करता है। प्राकृतिक आपदाओं, महामारी या अन्य संकट के समय इंसानियत की भावना ही हमें मिल कर इन समस्याओं का सामना करने की शक्ति देती है। जहां इंसानियत का अभाव होता है, वहां असमानता, हिंसा, और स्वार्थ का बोलबाला हो जाता है। समाज में नफरत और भेदभाव का माहौल बनने लगता है जो अंततः समाज की प्रगति में बाधा बनता है।

समाज में मानवता का आम माहौल बने तो उसके लिए बच्चों और युवाओं को शुरु से ही दया, करुणा और सेवा के मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए। ज़रूरतमंदों की मदद के लिए समाज में सेवा कार्यों को बढ़ावा देना चाहिए, जैसे मुफ़्त शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और रोजगार के अवसर। इसी तरह समाज में ऐसे व्यक्तियों को प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिन्होंने इंसानियत की मिसाल कायम की हो।

अंत में यही कहना है कि इंसानियत समाज की रीढ़ है।यह वह शक्ति है जो हमें बेहतर मनुष्य और समाज बनाने की प्रेरणा देती है। अगर हम इंसानियत को अपने जीवन का आधार बनाएं तो हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जहां शांति, प्रेम और समृद्धि का साम्राज्य हो। हमें यह याद रखना चाहिए कि इंसानियत ही वह पुल है जो हमें एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाता है।

❖❖❖

नदवे का तराना

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0
(1925.....1982)

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं ,हम नूरे यक़ीं,हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

हम मस्त निगाहे साक़ी हैं, हम बादा कशे सहबा–ए–हरम।
हम नग़म–ए–अहले क़लबो ज़बां, हम ज़ेहने रसा–ए–अहले क़लम।।
हम अज़मे जवां, हर लम्हा दवां, रखते हैं हमेशा आगे क़दम।।।
हम आबे गुहर, हम नूरे सहर, हम बादे बहारी अब्रे करम।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं ,हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलके हसन।।

जिस बज़्म के हैं हम तख़्त नशीं, वह बज़्म है बज़्मे इरफ़ानी।
उस बज़्म की है हर सुब्ह हसीं, हर शाम है उसकी नूरानी।।
यह बज़्म है उन शाहीनों की, फ़ितरत में है जिनके सुल्तानी।।।
यह क़लबो नज़र की दुनिया है, हर नक़्श है उसका ला फ़ानी।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं ,हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

गंजीन–ए–फ़ज़्ले रहमानी, वह जिसने बलंद इस्लाम किया।
दानिश कद–ए–शिब्ली जिसने, फिर ज़ौक़े सुखन को आम किया।।
वह बज़्मे सुलैमानी जिसने, तहक़ीक़ो नज़र का काम किया।।।
अनफासे अली ने रौशन फिर नदवे का जहाँ में नाम किया।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं ,हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

वह शम्अ़ यहां पर जलती है, जिस शम्अ़ से दुनिया रौशन है।
वह फूल यहां पर खिलता है, जिस फूल से गुलशन गुलशन है।।
यह अहले वफा का मरकज़ है, यह अहले सफ़ा का मख़ज़न है।।।
शहबाज़ यहां पर पलते हैं, यह लालो गुहर का मअदन है।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं, हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

यह अहले जुनूं की बस्ती है, यह अहले खिरद का गहवारा।
हर चीज़ यहां की शह पारा, हर फ़र्द यहां का सय्यारा।।
यां नूर की बारिश होती है, यां इल्म का बहता है धारा।।।
हर क़तरा यहां का मोती है, हर ज़र्रा यहां का मह पारा।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं, हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

जो साज़ यहां पर छिड़ता पर है, कहते हैं हरम का साज़ है वह।
सीनों में है जो भी राज़ यहां, दर अस्ल हिजाज़ी राज़ है वह।।
जो गूंजती है आवाज़ यहां, जादू से भरी आवाज़ है वह।।।
जो दिल न खिंचे इसकी जानिब, बे सोज़ है वह बे साज़ है वह।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं, हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

इस बज़्म के हम ने जाम पिये, इस बज़्म के हम मैख़ुवार बने।
इस बज़्म में हम बेदार हुए, इस बज़्म में हम होशियार बने।।
इस बज़्म में हम ग़य्यूर बने, बेबाक बने, ख़ुद्दार बने।।।
इस्लाम के हक़ में ढाल बने, बातिल के लिए तलवार बने।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं, हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

इस बज़्म की बरकत से बख़्शा, फ़ितरत ने परे परवाज़ हमें।
चलते हैं हवा के दोश पे हम, कहता है हर इक शहबाज़ हमें।।
खुद बढ़के बनाती है फ़ितरत, हमराज़ हमें, दमसाज़ हमें।।।
अल्लाह ने अपने फज़्लो करम से बख़्शा यह एजाज़ हमें।।।।

हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत हैं, हमसे है दरख़शां सुबहे वतन।
हम ताबिशे दीं, हम नूरे यक़ीं, हम हुसने अमल, हम ख़ुलक़े हसन।।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

शेरशाह सूरी:-

उस जमाने में शेरशाह (मृत्यु 1545 ई०) ने अपनी उदारता का बहुत अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया। उससे हिन्दू मुस्लिम दोनों खुश रहे। उसकी सेना में पैदल सिपाही और बन्दूकची सब के सब हिन्दू थे। उसके सबसे अच्छे सेनापतियों में प्रेमजीत गौड था। उसने हुमायूँ को हिन्दुस्तान से बाहर निकालने में उसका पीछा भी किया। ग्वालियर का राजा राम शाह शेरशाह के समर्थन में लड़ता रहा।

रायसेन के राजा पूरनमल के विरुद्ध राजा रामशाह शेरशाह का समर्थन करता रहा। राजा पूरनमल ने अपनी पराजय स्वीकार करके अपने को शेरशाह के हवाले करना चाहा तो रामशाह ही उसको शेरशाह के पास ले जाने के लिए पहुंचा लेकिन उसने शेरशाह के सैनिक सरदार शुजाअत खान के साथ शेरशाह के पास जाना पसंद किया। शुजाअत खान रायसेन के किले में पहुंचा तो राजा पूरनमल की रानी रतनावली अपने प्यारे पति से अलग होना पसंद नहीं करती थी। इसलिए उसने शुजाअत खान के पास यह सन्देश भेजा कि यह अपने पति के वियोग में उस समय तक निरन्तर व्रत रखेगी और किले की चारदीवारी पर बैठी रहेगी जब तक कि वह उसको वापस आते न देख लेगी। शुजाअत खान ने उससे वादा किया कि उसका पति भैया पूरनमल दूसरे दिन वापस आ जाएगा। पूरनमल शेरशाह के सामने प्रस्तुत किया गया तो शेरशाह ने उसको 100 घोड़े और 100 शानदार खिलअत प्रदान की और उसको किले में वापस जाने की अनुमति दे दी। भैया पूरनमल अपने छोटे भाई चित्रभीज को शेरशाह की सेवा के लिए अपने पीछे छोड़ गया। शेरशाह ने पूरनमल के साथ जो व्यवहार किया, उसकी विभिन्न रिवायतें बयान की जाती हैं। लेकिन एक रिवायत यह भी है जो उपरोक्त पंक्तियों में बयान की गयी है। यह तारीख शेरशाही, जिसे अब्बास खान ने लिखा है, उसकी रिवायत है।

इतिहासकारों का कहना है कि राजपूतों का एक दस्ता शेरशाह की सेना में था। इस बात को वर्तमान युग के इतिहासकार कालका रंजन कानूनगो ने भी स्वीकार किया है जो यह लिखते हैं कि ''शेरशाह की सेना में हिन्दुओं को सम्मानित पद मिलते रहे। इसके हिन्दू पैदल सिपाही और बन्दूकधारी बक्सरिया की नस्ल से थे। शेरशाह उनपर उत्तरी राज्यों के सैनिकों की तुलना में अधिक भरोसा करता।

डॉ0 कालका रंजन कानूनगो शेरशाह की उपलब्धियों पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं:—

शेरशाह ने धर्म और राजनीति में ऐसा अच्छा तालमेल पैदा कर लिया था जिससे हिन्दुस्तानी राष्ट्रीयता को विकसित होने के लिए अत्यन्त उपयुक्त वातावरण मिल गया। श्री डब्ल्यू0 क्रूक के इस मत से किसी को मतभेद नहीं हो सकता कि, शेरशाह पहला शासक है जिसने जनता की इच्छा के अनुसार एक हिन्दुस्तानी सल्तनत की बुनियाद डालने की कोशिश की और यह काम उसने अपने शासनकाल के उस राजनैतिक सिद्धान्त से हटकर किया कि राजनीतिक एकता धार्मिक एकरुपता के बिना स्थापित नहीं हो सकती। उसने

यह महसूस किया कि समूचे हिन्दुओं से इस्लाम धर्म स्वीकार कराना मात्र मूर्खता है अतः उसने न हिन्दू धर्म के अनुयायियों पर किसी तरह का प्रतिबन्ध लगाया और न उनके साथ अपमानजनक रवैया अपनाया। उसकी धार्मिक नीति में बहुत सन्तुलन रहा। उसने न किसी मन्दिर को गिराया और न किसी मूर्ति को तोड़ा। उसकी धार्मिक नीति में केवल उदारता ही न थी बल्कि निष्पक्षता भी थी। इस्लाम के प्रचार–प्रसार के सम्बन्ध में जो बातें सरकार की ओर से की जाती थीं उन सबको उसने रुकवा दिया। यद्यपि उसने जिजिया लेना बन्द नहीं किया लेकिन कम से कम उस भावना में उसको लागू नहीं किया जिसका उपदेश काजी मुगीसुद्दीन ने सुल्तान अलाउद्दीन के जमाने में दिया था, शेरशाह ने हिन्दू धर्म का सम्मान हर बात में रखा। हिन्दुओं के लिए हर सराय में अलग व्यवस्था थी। शेरशाह ने राजनीति में धर्मनिरपेक्ष भावना पैदा की। यद्यपि वह धार्मिक रूप से पक्का मुसलमान होने में किसी दूसरे मुसलमान से कम न था, लेकिन उसने अपनी सरकार की नीति में इसे प्रकट नहीं होने दिया वह पहला शासक है जिसने विभिन्न धर्मों को मिलाकर एक हिन्दुस्तानी कौम बनाने की कोशिश की। यह श्रेय अकबर को दिया जाता है और शेरशाह के लिए यह दावा बेकार सा मालूम होता है क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से उसने जिजिया लेना बन्द नहीं किया, गाय की कुर्बानी के विरोध के लिए कोई कानून नहीं बनाया। संस्कृत भाषा को कोई ऐसा बढ़ावा नहीं दिया जिससे हिन्दू और मुसलमान दोनों में सांस्कृतिक एकता और विद्या सम्बन्धी एकरूपता पैदा होती। उसने हिन्दू मुसलमान में विवाह सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश नहीं की। यह सभी बातें अकबर के बारे में कही जाती हैं। लेकिन शेरशाह सही अर्थों में एक योग्य शासक था। उसने अलाउद्दीन के चिराग के माध्यम से एक रात में कोई हवाई किला तैयार करने की कोशिश नहीं की बल्कि एक ऐसी जानदार और न्यायप्रिय शासन व्यवस्था स्थापित की जिससे हिन्दुओं में राजनीतिक और आर्थिक सम्पन्नता अपने आप पैदा हो गयी। उसने हिन्दू मुसलमान को एक बनकर रहने पर तैयार किया, इस तरह उसने हिन्दुस्तानी राष्ट्रीयता की बुनियाद डाली। उसकी प्रारम्भिक दौर की जितनी आवश्यक चीजें थीं, उन सब पर अमल करने की कोशिश की। उसने हिन्दुस्तानी राष्ट्रीयता के लिए जमीन बराबर करके उसमें बीज भी डाल दिया लेकिन अफसोस है कि वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहा कि अपनी कोशिशों का नतीजा निकलते हुए देखता। उसने जो कुछ किया यदि उससे अधिक करने की कोशिश करता तो नाकाम रहता। यदि यह जिजिया लेना बन्द कर देता या गाय की कुर्बानी रुकवा देता तो यह अत्यन्त नासमझी होती, इस तरह के कदम देश के लिए हानिकारक होते। लेकिन इसके बावजूद हिन्दू और मुसलमानों के सम्बन्ध खुशगवार थे।

ए0एल0 श्रीवास्तव ने अपनी किताब मुगल एम्पायर में लिखा है कि शेरशाह की समझदारी इसमें थी कि उसने राजनीति और धर्म को मिलाया नहीं था। उसने यह अनुमान लगा लिया था कि वह हिन्दुओं की अनदेखी करके राज नहीं कर सकता था। इसलिए उसने अपने देश की व्यवस्था और सैनिक व्यवस्था में हिन्दुओं का पूरा सहयोग प्राप्त किया।

डॉ0 पी0 शरण लिखते हैं कि शेरशाह से पहले के मुसलमान शासकों ने अपनी गैर मुस्लिम प्रजा को जो धार्मिक स्वतन्त्रता दे रखी थी उनको देना पड़ा, लेकिन शेरशाह ने तो अपने राजनीतिक हितों के आधार पर उनको ऐसी सम्पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता दी कि उसके बाद हिन्दू अपने धार्मिक और

सामाजिक कानून में पूरी तरह स्वतन्त्र रहे। उन पर इस्लामी क़ानून लागू नहीं होता था। ग्रेडी ने लिखा है कि मुसलमान योद्धाओं का रवैया यूरोप के विजेताओं से भिन्न रहा। वह न केवल अपने कानून, बल्कि अपनी सरकार के अन्दर रहने वाले गैर मुस्लिमों के कानून की कठोरता से पालन करते, जो गैर मुस्लिम उनकी सत्ता को स्वीकार कर लेते तो वह फिर अपने धार्मिक मामलों में पूरी तरह स्वतन्त्र रहते बल्कि मुसलमानों के विरुद्ध आवश्यकता पड़ने पर उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की जाती। अधार्मिक झगड़ों में उन पर सरकारी कानून तो लागू किया जाता लेकिन सम्पत्ति आदि के मामले में उन्हीं के कानून का पालन किया जाता, और उनके पंडितों और हिन्दू कानून के विशेषज्ञों से परामर्श लिए जाते। इसका स्पष्टीकरण फतावा आलमगीरी में भी कर दिया गया है। और यह सच्चाई है कि दिल्ली के सुल्तानों के जमाने से लेकर मुगलों के अन्तिम शासनकाल तक हिन्दुओं के व्यक्तिगत कानून और धार्मिक कानूनों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया और उनके धार्मिक कानूनों और भावनाओं का सम्मान हर हाल में किया गया। डॉ0 पी0 शरण ने स्वीकार किया है कि बिना किसी मुबालगे के कहा जा सकता है कि शेरशाह और मुगल शासकों के उच्चतम और अत्यन्त आवश्यक कर्तव्यों में लोगों के साथ न्याय करना सम्मिलित था और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने खुले दिल से कोशिश की और सच तो यह है कि उसमें वह सफल रहे।

विद्या में बोद्धिक उदारताः—

मलिक मुहम्मद जायसी (जन्म 1498 ई0) ने शेरशाह ही के जमाने 1542 ई0 में हिन्दी में पद्मावत लिख कर अपनी भाषाई और धार्मिक उदारता का प्रमाण दिया। उसके सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का विचार है कि भाषा पर नियन्त्रण और शैली की सादगी के अनुसार यह किसी तरह रामायण से कम नहीं, पद्मावत के अतिरिक्त मलिक मुहम्मद जायसी ने अखरावट और चित्ररेखा लिखे। मलिक मुहम्मद जायसी ने हिन्दी भाषा में जो अपनी विशेष योग्यता का प्रदर्शन किया है, उससे स्पष्ट होता है कि मुसलमानों ने धार्मिक पक्षपात से अलग हो कर इस देश की भाषा को अपनाया और उसने ऐसा जौहर दिखाया कि स्वयं हिन्दुओं को इस पर गर्व हुआ।

❖❖❖

पृष्ठ ...13...का शेष

मुआशरे में इस्लामी कानून की बालादस्ती न हो और सरकशी, नाकामी, तालीमाते नबवी (सल्ल0) की खिलाफ वर्जी का सिलसिला जारी रहे, हम साइंस, टेक्नालाजी, सनअत, अस्लहासाजी, और तमाम उलूम व फुनून में जितनी तरक्की कर जाएं, उस तरक्की के नताएज हमारे हक में बेहतर नहीं निकलेंगे, क्योंकि हमारा मुस्तकबिल दीन से वाबस्ता है और दीन ही हमारी हर तरक्की की बुनियाद है। कुरआन करीम का साफ ऐलान है—

''मत अफ़सोस करो, मत गम करो, अगर तुम मोमिन हो (शरीअत पर कारबन्द हो) तो तुम ही गालिब आकर रहोगे।

दूसरों के जवाल के ख़्वाब आंखों में सजाने के बजाए हमें अपने अन्दर तब्दीली लाने की ज़रूरत है। हमारी हैसियत दूसरी कौमों से मुख़्तलिफ़ है। हमारी तरक़्क़ी का दारोमदार सिर्फ मादी जराए के हुसूल में नहीं बल्कि मादी वसाएल और रूहानी तक़ाजों को यकज़ा करने में हैं। इख़्लास के साथ बसीरत से काम लेने में और मुआशरत को शरीअत का पाबन्द बनाने में है, तब हम दुनिया के नक़्शे पर उस हैसियत से उभर सकते हैं जिस हैसियत से दुनिया ने हमें कभी देखा था।

❖❖❖

लोगो! शाबान आ गया है

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

''शाबान इस्लामी साल का आठवाँ महीना है'' जो रमज़ानुल मुबारक से पहले आता है। शाबान एक अरबी शब्द है, और अरबी शब्द कोश में ''शअब'' के माने फैलने के हैं क्योंकि यह महीना रहमतों के फैलने का है इसलिए इसको शाबान कहा जाता है। रमजानुल मुबारक का महीना रहमतों बरकतों और अल्लाह की रज़ा व ख़ुशनूदी को समेटने और जहन्नम से पनाह चाहने का महीना है। इसलिए हुज़ूर अक़्दस सल्ल0 रजब का चाँद देखते ही दुआ फरमाने लगते किः ऐ अल्लाह! हमारे रजब और शाबान में बरकत अता फरमा और हमको रमज़ान तक पहुँचा दे।

इस महीने की फ़ज़ीलत व अज़मत को समझने के लिए इतना ही काफी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल0 ने फरमाया ''रजब अल्लाह का महीना है, शाबान मेरा महीना है, और रमजान मेरी उम्मत का महीना है, और शाबान गुनाह से दूर करने वाला है और रमजान का महीना आदमी को गुनाहों से पाक सॉफ करता है।

लेकिन अफ़सोस कि शाबान के आते ही लोग ग़ैर इस्लामी रस्मों रिवाजों और ख़ुराफात की तैयारी में मगन हो जाते हैं जिन का शरीअते इस्लामी से दूर दूर का भी कोई वास्ता नहीं और न कोई सही हदीस इनके बारे में मिलती है। हलवा, आतिशबाजी, चरागाँ वगैरा ग़ैर इस्लामी रस्में हैं जो मुस्लिम समाज में हिन्दुओं के साथ रहने सहने की वजह से दाख़िल हो गयी हैं यह हिन्दुओं के एक मशहूर त्यौहार दीवाली की नक़ल है, हदीस शरीफ में तो सिर्फ इतना ही है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम माहे शाबान में रोज़े ज़्यादा से ज़्यादा रखा करते थे।

आइये देखते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किस तरह रमजान की अहमियत को ध्यान में रखते हुए माहे रजब से ही रमज़ान की तैयारी शुरु कर देते थे और शाबान में तो व्यक्तिगत और सामूहिक मामलात को निपटा कर अपने आपको फारिग़ कर लेते ताकि रहमत व बरकत के महीने का एक लम्हा भी बेकार न गुज़रे।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया रमज़ान के लिहाज़ से शाबान के चाँद को खूब अच्छी तरह गिनो। (तिर्मिज़ी)

एक दूसरी हदीस जो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 शाबान के दिन और उसकी तारीखें जितने एहतिमाम से याद रखते थे उतने एहतिमाम से किसी दूसरे महीने की तारीखें याद नहीं रखते थे। फिर रमज़ान का चाँद देख कर रोज़े रखते थे और अगर (29 शाबान को) चाँद दिखाई न देता तो 30 दिन की गिनती पूरी कर के फिर रोज़े रखते थे।

(अबू दाऊद)

इन दोनों रिवायतों से आप सल्ल0 का रमज़ान के एहतिमाम की वजह से शाबान का चाँद देखने उसकी तारीखें याद रखने और चाँद देख कर ही रमज़ान के रोज़े शुरु करने का ख़ास तौर से ज़िक्र है।

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शाबान में सब महीनों

से ज़्यादा रोज़े रखते थे बल्कि पूरा शाबान रोज़े में गुज़रता था।

और एक रिवायत में है कि शाबान में कुछ ही दिन ऐसे होते थे कि आप सल्ल0 रोज़े से न हों। (बुख़ारी–मुस्लिम)

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की यह रिवायत जो हज़रते आयशा रज़ि0 के हवाले से है इसमें माहे शाबान में और महीनों से ज़्यादा नफ़्ली रोज़े रखने की तफ़्सील मिलती है बल्कि हदीस की एक रिवायत में है कि आप सल्ल0 करीब करीब पूरे महीने शाबान के रोज़े रखते थे और बहुत कम ही दिन नाग़ा फरमाते थे।

शाबान के महीने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़्यादा नफ़्ली रोज़े रखने के कई सबब और हिक्मतें बयान की गयी हैं अतः हज़रत उसामा बिन ज़ैद की एक हदीस में है कि खुद रसूलुल्लाह सल्ल0 से इसके बारे में सवाल किया गया तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि इसी महीने में बारगाहे इलाही में बन्दों के आमाल की पेशी होती है, मैं चाहता हूँ कि जब मेरे आमाल की पेशी हो तो मैं रोज़े से रहूँ।

और हज़रत आयशा रज़ि0 से एक हदीस बयान की गयी है जिसमें फ़रमाया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शाबान के महीने में बहुत ज़्यादा रोज़े इसलिए रखते थे कि पूरे साल में मरने वालों की सूची इसी महीने में मलकुल मौत के हवाले की जाती है। आप सल्ल0 चाहते थे कि जब आप की वफ़ात के बारे में मलकुल मौत को हुक्म दिये जा रहे हों तो उस वक़्त आप रोज़े से हों।

इसके अलावा रमज़ान के क़रीब होने से उसके अनवार व बरकात से लगाव पैदा करने का शौक व जज़बा माहे शाबान के नफ़्ली रोज़े होंगे। और शाबान के उन रोज़ों की निस्बत, रमज़ान के रोज़ों से वही होगी जो फर्ज़ नमाज़ों से पहले पढ़ी जाने वाली नफ़्लों की फर्जों से होती है।

अब हम रमज़ान के आने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिये हुए एक ख़ुत्बे का अनुवाद पेश करके अपनी बात ख़त्म करना चाहते हैं। जिसमें बड़ी तफ़्सील से आप के मामूलात का जिक्रे मुबारक है।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 से रिवायत है कि शाबान की आख़री तरीख़ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को एक खुतबा दिया उसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः–

ऐ लोगो! तुम पर एक अज़मत और बरकत वाला महीना आ रहा है, उस मुबारक महीने की एक रात (जिसे शबे क़द्र कहा जाता है) हज़ार महीनों से बेहतर है उस महीने के रोज़े अल्लाह तआला ने फर्ज़ किये हैं और उसकी रातों में अल्लाह के सामने खड़ा होने (यानी तरावीह पढ़ने) को नफ़्ल इबादत मुकर्रर किया है (जिसका बहुत बड़ा सवाब रखा है)। जो शख़्स इस महीने में अल्लाह की रज़ा और उसकी निकटता हासिल करने के लिए कोई ग़ैर फ़र्ज़ इबादत (सुन्नत–नफ़्ल) अदा करेगा तो उस को दूसरे ज़माने के फ़र्ज़ों के बराबर सवाब मिलेगा और इस महीने में फ़र्ज़ अदा करने का सवाब दूसरे ज़माने के सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर मिलेगा। यह सब्र का महीना है, और सब्र का बदला जन्नत है। यह हमदर्दी और सहानुभूति का महीना है और यही वह महीना है जिसमें मोमिन बंदों की रोज़ी में बढ़ोत्तरी की जाती है। जिस ने इस महीने में किसी रोज़ेदार को इफ़्तार कराया तो उसके लिए गुनाहों की मग़फ़िरत और दोज़ख़ की आग से आज़ादी का

ज़रीया होगा। और उसको रोज़ेदार के बराबर सवाब दिया जायेगा। बग़ैर इसके कि रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी की जाये।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया गया कि या रसूलुल्लाह हम में हर एक को तो इफ़्तार कराने का सामान मयस्सर नहीं होता तो क्या ग़रीब लोग इस अज़ीम सवाब से महरूम रहेंगे? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला यह सवाब उस शख़्स को भी देगा जो दूध की थोड़ी सी लस्सी या सिर्फ पानी ही के एक घूँट से किसी रोज़ेदार को रोज़ा इफ़्तार करा दे, और जो कोई किसी रोज़ेदार को पूरा खाना खिला दे उसको अल्लाह तआला मेरे हौज़ से ऐसा पानी पिलायेगा जिसके बाद उसको कभी प्यास ही न लगेगी यहाँ तक कि वह जन्नत में पहुंच जायेगा।

उसके बाद आप सल्ल0 ने फरमाया इस मुबारक महीने का पहला हिस्सा रहमत, बीच का हिस्सा मगफ़िरत, और आख़िरी हिस्सा दोज़ख की आग से आज़ादी है। आगे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल ने फरमाया जो आदमी इस महीने में अपने नौकर व ख़िदमतगार के कामों में कमी कर देगा अल्लाह तआला उसकी मग़फिरत फ़रमा देगा और उसको दोज़ख से रिहाई और आज़ादी दे देगा।

(शुअबुल ईमान)

प्रिय पाठको! जब फरवरी 2025 का ''सच्चा राही'' आपके हाथों में पहुंचेगा तो शाबान का महीना शुरु हो चुका होगा और रमज़ान बिल्कुल करीब होगा, इसलिए हर समझदार और अक़्लमंद व्यक्ति को चाहिए कि इस महीने की रहमतों और बरकतों को हासिल करने के लिए शाबान के महीने से ही गफ़लत को छोड़ कर माहे रमजानुल मुबारक की तैयारी तेज़ कर दे जैसा कि आप सल्ल0 और सहाबा–ए–किराम रज़ि0 किया करते थे और अपने गुनाहों से तौबा व इस्तिगफार करे और कुरआन की तिलावत के मामूल में इजाफ़ा करना शुरु कर दे अपने मालों की ज़कात व सद्क़ात से अपने गरीबों की देख भाल, और अपने समाज की बेहतरी के लिए क़ौम के बच्चों की तालीम–तरबियत को अपना मिशन बनाये इसलिए कि पूरे देश में जिस प्रकार की मजहबी और नजरियाती जंग अब शुरु हुई है उसका मुकाबला किसी हथियार या टेक्नालोजी से नहीं किया जा सकता बल्कि इस जंग में कामयाबी हासिल करने का मात्र एक रास्ता यह है कि हम अपनी नई नस्ल को उच्च शिक्षा की ओर प्रेरित करें और उनको इस लायक़ बना दें कि वह अपने इल्म के हथियार से अपने मुखालिफीन को पस्त करते हुए कामयाबी की उन बुलंदियों पर पहुँचें जिन पर हमारी पहुँच मुश्किल बना दी गई है इसलिए कि तालीम के बगैर कोई क़ौम तरक़्क़ी नहीं कर सकती, और हर तरह की नेकियों को समेटने और अल्लाह को राजी करने के लिए अपने को तैयार करने की कोशिश करे।

अल्लाह करे कि हम सब के दिलों में इन हदीसों से कुछ सीख कर अमल करने का जज़्बा जाग उठे।

आमीन!

❖❖❖

ख़ुश ख़बरी

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी नदवतुल उलमा के नए नाज़िरे आम नियुक्त।

हम दिल की गहराइयों से मुबारक बाद पेश करते हैं।

(इदारा)

कुरआन और मानव सम्मान

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

अल्लाह तआला जो सारे संसार का स्वामी और मालिक है उसने अपनी समस्त मख़लूक़ (सृष्टियों) में इन्सान को सर्वश्रेष्ट और सम्मानीय बनाया है जिसकी सूचना उसने स्पष्ट रूप से कुरआन शरीफ़ में दी है, फरमाता है ''और निश्चित रूप से हमने आदम की सन्तान को सम्मान प्रदान किया और थल और जल (समुद्र) में उनको सवारी दी और उनको अच्छी अच्छी रोज़ी दी और अपनी सृष्टि में बहुतों पर उनको ख़ास रुत्बा प्रदान किया''।

(सूरः बनी इस्राईल आयत नं0 70)

आदम की सन्तान में मोमिन, क़ाफ़िर, अल्लाह के आदेशों का पालन करने वाले और अल्लाह के आदेशों का पालन न करने वाले सब सम्मिलित हैं, ये सम्मान और श्रेष्ठता दूसरी सृष्टियों जीव जन्तु, वनस्पति आदि के मुक़ाबले में हर इन्सान को प्राप्त है। ये सम्मान विभिन्न प्रकार से है, जो शक़्ल व सूरत, डील–डौल, अल्लाह ने इन्सान को प्रदान किया है वह किसी अन्य सृष्टि को प्राप्त नहीं जो बुद्धि इन्सान को दी गई है, उस बुद्धि द्वारा उसने अपने आराम और राहत के लिए नाना प्रकार की वस्तुओं का आविष्कार किया, जिससे दूसरे जीव जन्तु और पशु वंचित हैं। बुद्धि द्वारा इन्सान उचति और अनुचित, लाभदायक और हानिकारक वस्तुओं का अन्तर समझता है, इन्सान अपने से कई गुना शक्ति में हाथी, घोडा, ऊँट जैसे पशुओं को अपने वश में लाता है और उन्हें अपनी सवारी और बोझा उठाने में प्रयोग करता है ये अल्लाह की ओर से औलादे आदम का सम्मान है। इसी प्रकार अल्लाह ने इन्सान की सेवा में चाँद सूरज, बादल, पहाड़, नदी और हवा को लगा दिया है, यदि इन सबकी सेवाएं न हों तो इन्सान को धरती से कैसे अन्न, फल और फूल मिलते, यह सब इन्सान के सम्मान में है। कुरआन ने जगह जगह इस विषय को बहुत सुन्दर ढंग से बयान किया, कुरआन के 30वें पारे की सूरः अल–नबा की अनुवादित आयतें पढ़िये ''क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया और पहाड़ों को मेखें'' (जिस प्रकार कील किसी चीज़ में गाड़ दी जाए तो उसकी अधिकतर भाग अन्दर घुस कर मज़बूती पैदा करता है उसी प्रकार पहाड़ों को अल्लाह तआला ने ज़मीन में गाड़ दिया है) ''और तुम को जोड़े–जोड़े पैदा किया'' और तुम्हारी नींद को आराम की चीज़ बनाया'' और रात को पर्दे का साधन बनाया, जिस तरह आदमी कपड़ा ओढ़ कर अपना बदन छिपा लेता है, उसी प्रकार रात का अंधेरा प्राणियों को ढांक लेता है, और दिन को रोज़गार का साधन घोषित किया और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आकाश) निर्मित किए और एक चमकता हुआ चिराग़ बनाया, और लदे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया ताकि उसके द्वारा हम दाना और सब्जियाँ उगाएं और घने बाग़। यह सब अल्लाह की ओर से मानव पर उपकार और मानव का सम्मान है, ऐसी दशा में मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अल्लाह का आज्ञाकारी बन्दा बने और उसी की इबादत करे उसकी इबादत में किसी दूसरे को साझीदार न बनाए। यह अल्लाह को पसन्द नहीं है, इबादत केवल उसी की

की जाए।

मनुष्य पर अल्लाह के बड़े–बड़े उपकार हैं जिसका वर्णन कुरआन शरीफ में विस्तार पूर्वक है, सूरः तीन में अल्लाह तआला फरमाता है– हमने इन्सान को बेहतरीन साँचे में ढाल कर पैदा किया, फिर हमने उसको नीचों से नीचा गिरा दिया, यानी हर इन्सान सही प्रकृति लेकर आता है लेकिन फिर वह आस–पास से प्रभावित हो कर गिरता चला जाता है, सिवाय उन लोगों के जिनके अन्दर चार गुण हों, ईमान, अच्छे काम, सच्चाई की ओर बुलाना और उसका माहौल बनाने की चिन्ता, और धैर्य की ओर बुलाना और उसका माहौल बनाने की चिन्ता। इसी संदर्भ में सूरह नहल आयत नं0 90 प्रस्तुत है– बेशक अल्लाह न्याय का और भलाई करने का और नातेदारों को देने (दिलाने) का आदेश करता है और अश्लीलता से और अशिष्ट काम से और सरकशी से रोकता है वह तुम्हें नसीहत करता है कि शायद तुम ध्यान दो, आयत में तीन चीज़ों का आदेश है, एक न्याय जिसका मतलब यह है कि आदमी सारे अक़ायद (विश्वासों) व कामों में शिष्टाचारों और मामलों आदि में संतुलन व न्याय के साथ हो, दुशमन के साथ भी न्याय का व्यवहार हो, अन्दर व बाहर एक जैसा हो, दूसरे एहसान जिसका अर्थ यह है कि आदमी ख़ुद भलाई की मूर्ति बन कर दूसरों के लिए भलाई चाहे, न्याय व इन्साफ़ से थोड़ा बुलन्द हो कर माफ़ करने की आदत डाले। तीसरी बात नातेदारों से संबंधित है कि उनके साथ थोड़ा बढ़ कर शिष्टता का व्यवहार किया जाए, और इस आयत में जिन तीन चीज़ों से रोका गया है वे सारी बुराईयों के तीन आधार हैं, इससे हर बुराई की जड़ कट कर रह जाती है। पारा–13 सूरः इब्राहीम की अनुवादित आयतों को पढ़ये– ''वह अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और ऊपर से पानी बरसाया फिर उससे तुम्हारी रोज़ी के लिए फल निकाले और तुम्हारे लिए नाव काम पर लगा दी, ताकि उसके आदेश से समुद्र में चलती रहे और तुम्हारे लिए नदियाँ भी काम पर लगा दी और तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को काम में लगा दिया, वे दोनों अपने काम पर लगे हैं और रात व दिन को तुम्हारे लिए काम पर लगा दिया। और जो तुमने मांगा वह उसने तुम्हें दिया और अगर तुम अल्लाह के उपकार को गिन्ना चाहो तो तुम उसको गिन नहीं सकते, बेशक इन्सान बड़ा ही अन्याय करने वाला और बहुत ही नाशुक्रा है। यह अल्लाह के असीम इनआमों का वर्णन है, इस प्रकार तौहीद का प्रमाण दिया जा रहा है।

मूलतः कुरआन शरीफ़ हिदायत और मार्गदर्शन की किताब है जिसके सम्बोधक इन्सान हैं। कुरआनी शिक्षा का उद्देश्य यह है कि इन्सान पथभ्रष्ट न हो और पूर्ण रूप से अपने वास्तविक स्वामी अल्लाह का अज्ञाकारी बन्दा बने, ऐसे आज्ञाकारी बन्दे को कुरआन की भाषा में मोमिन और मुस्लिम कहते हैं, अल्लाह की सृष्टि में इन्सान सर्वश्रेष्ठ है, इन्सान पर अल्लाह के बड़े उपकार हैं अल्लाह ने उसको बड़ा सम्मान दिया है, कुरआन में इसका वर्णन आप विस्तार पूर्वक पाएंगे, इस लेख में उदाहरण के तौर पर संक्षेप में दिया गया है, अन्त में हम कुरआन की एक अहम सूरः ''नहल'' के विशेष अंश का अनुवाद प्रस्तुत करते हैं जिसे पढ़ कर आप भली भांति संबंधित विषय ''कुरआन और मानव सम्मान'' समझ जाएंगे, आशा है कि इसके पढ़ने के बाद आपके अन्दर अधिक चेष्टा उत्पन्न होगी कि कुरआन को पढ़ें और समझने की कोशिश करें, इन्सान जिहालत और अज्ञानता के अंधेरे में भटक रहा है, सीधा

मार्ग उसकी आँखों से ओझल है अल्लाह अपने बन्दों पर दयालू और कृपालु है, आदम की सन्तान की रहबरी और मार्ग दर्शन के लिए अपने अन्तिम नबी को भेजा और अन्तिम किताब उतारी उसने आसमानों और ज़मीन को ठीक–ठीक पैदा किया, जो भी वह शिर्क करते हैं उससे वह उच्चतर है उसने इन्सान को वीर्य से पैदा किया तो वह खुल कर झगड़ने पर आ गया और उसने चौपाए पैदा किए जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी पहुंचाने का साधन भी है और भी फ़ायदे हैं और उसमें से कुछ को तुम खाते भी हो, उनसे ऊन निकलता है उसके चमड़े से कैसी कैसी चीज़ें तैयार होती हैं, फिर दूध–दही मक्खन सब नेमतें उसी से प्राप्त होती हैं। और उनमें तुम्हारे लिए बड़ी शोभा है जब तुम उनको वापस लाते हो और जब उनको चरने के लिए छोड़ते हो, और ऐसे शहरों तक वे तुम्हारा बोझ ढो ले जाते हैं कि तुम जान जोखिम में डाल कर ही वहां पहुंच सकते थे, बेशक तुम्हारा पालनहार बड़ा स्नेही बहुत ही दयालु है, और घोड़े व खच्चर और गधे उसी ने पैदा किए तुम्हारी सवारी के लिए और शोभा के रूप में वह ऐसी चीज़ें पैदा करेगा जिनको तुम जानते भी नहीं, (एक ज़माना था कि सिर्फ जानवरों ही से सवारी और सामान ढोने का काम लिया जाता था, मगर पवित्र कुरआन ने आगे बनने वाली सारी सवारियों के ओर इशारा कर दिया, मोटर रेल, जहाज़, रॉकेट, सब इसी में शामिल हैं और भी जो आगे नई–नई सवारियाँ बनाई जाएंगी। वही है जिसने तुम्हारे लिए ऊपर से वर्षा की जिससे पीने का पानी मिलता है और उसी से पेड़ उगते हैं जिनमें तुम अपने जानवर चराते हो, उसी से वह तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर व अंगूर और हर तरह के फल उगाता है, निश्चित रूप से इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो सोच विचार करते हैं, और उसी ने तुम्हारे लिए रात व दिन और सूरज व चाँद काम पर लगा दिये और सितारे भी उसी के आदेश पर चल रहे हैं निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं और तुम्हारे लिए उसने ज़मीन में जो कुछ रंग बिरंगी चीज़ें फैला रखी हैं निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो शिक्षा लेते हैं, और वही है जिसने समुद्र को काम पर लगा दिया ताकि तुम ताज़ा गोश्त खाओ और उससे वह आभूषण निकालो जो तुम पहनते हो और आप नाव को देखें कि वे उसमें फाड़ती चल रही है और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (कृपा) ढूँढो और शायद कि तुम उसका एहसान मानो''।

पालता है बीज को मिट्टी की तारीक़ी में कौन?
कौन दरयाओं की मौजों से उठाता है सहाब
कौन लाया खींच कर पच्छिम से बादे साजगार
ख़ाक यह किसकी है? किसका है नूरे आफ़ताब
किसने भरदी मोतियों से ख़ोशए गनदुम की जेब
मौसमों को किसने सिखलाई है खूए इनकिलाब।

अल्लाह तआला के असीम उपकारों और पुरस्कारों का वर्णन है, इन्सान अपनी मेहनत से जो प्राप्त करता है वह सब अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है, समुद्र में मछलियाँ पकड़ने वाले जाल डालते रहते हैं, ग़ोताख़ोर मोती निकालने के लिए डुबकी लगाते रहते हैं यदि अल्लाह मछलियाँ और मोती व रत्न न पैदा करता तो किसको क्या मिलता।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक भाई का एक्सीडेंट की वजह से देहांत हो गया था अब उसे, कुछ मुआवज़ा मिल रहा है, इस पैसे का लेना कैसा है? क्या इससे उमरा या हज कर सकते हैं?

उत्तरः उलमा और मुफ़्तियों ने एक्सीडेंट में मिलने वाली रक़म को दियत (जुरमाने) में शुमार किया है और दियत में तमाम वारिस हिस्सेदार होते हैं किसी एक को अकेले ख़र्च करने की इजाज़त नहीं, सबसे बेहतर यह है कि वारिसों के दरमियान उन पैसों को शरीयत के मुताबिक़ तक़सीम कर दिया जाए फिर हर एक अपने हिस्से का मालिक होगा उससे चाहे वह हज करे या उमरा। या अगर सारे हिस्सेदारों की सहमति हो तो किसी को भेज सकते हैं या किसी भी काम में लगा सकते हैं।

प्रश्नः क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल सही है या नहीं?

उत्तरः किसी बड़ी परेशानी और इमरजेंसी सूरते हाल पेश आने पर क्रेडिट कार्ड बनवाया और लिया जा सकता है, बिला ज़रूरत आम हालात में इसका इस्तेमाल जायज़ नहीं। इसी प्रकार उसके खरीदने बेचने का एजेंट बनना भी दुरुस्त नहीं।

प्रश्नः एक कमीशन एजेन्ट है जो बेचने वाले से भी कमीशन लेता है और खरीदने वाले से भी कमीशन लेता है, क्या यह सूरत जाइज है?

उत्तरः एजेन्ट की हैसियत अस्ल में वकील व दल्लाल की होती है और वकालत की उजरत ली जा सकती है, तो अगर वह बेचने वाले के लिए काम कर रहा था तो सिर्फ उसी से उजरत ले सकता है खरीदार से नहीं, हाँ! अगर कोई एजेंसी इस बात के लिए काइम हो कि वह ताजिर और ग्राहक दोनों के लिए काम करती हो तो वह दोनों ही से उजरत ले सकती है, अल्लामा शामी रह0 ने इस की सराहत की है।

(रद्दुल मुखतारः 4/42)

प्रश्नः बेशुमार मुसलमान पतंगों और पटाखों का कारोबार करते हैं, क्या ऐसा कारोबार करना मुसलमान के लिए जाइज़ है?

उत्तरः पतंग उड़ाने में अगर हार जीत की शर्त लगाई जाए तो जुआ होने की वजह से हराम है। (अलदुर्रुलमुखतार अला हामिश रद्दुल मुहतारः 1/577) अगर शर्त न हो और नमाज़ें पतंग बाज़ी में इन्हिमाक की वजह से फौत न हों तो गुंजाइश है।

(अलदुर्रुलमुखतार अला हामिश रद्दुल मुहतारः 1/579)

प्रश्नः अगर कोई शख्स मैरेज हाल (शादी घर) बनवाए और किराये पर लगाए तो यह दुरुस्त है या नहीं? यह सवाल इस वजह से है कि उसे मुस्लिम व गैर मुस्लिम किराये पर लेते हैं और आज़ादाना तौर पर मर्दों और औरतों का इख्तिलात (मिलना जुलना) होता है, तो क्या इस्लामी शरअ़ में इस हाल को किराये पर उठाना और उस की आमदनी दुरुस्त है?

उत्तरः मैरेज हाल बनाना और उसको किराये पर चलाना जायज़ है, फिर भी मालिक को

चाहिए कि वह किराये के लिए ऐसे उसूल व जाबिते बनाए जिन की वजह से शरीअत के खिलाफ बातें न हो सकें, इस पर भी कोई शरीअ़त के खिलाफ हरकतें करेगा तो मालिक गुनहगार नहीं होगा, और किराये की आमदनी दुरुस्त होगी।

(फतावा हिन्दीयाः 4/42)

प्रश्नः एक शख्स का निकाह दो साल पहले हुआ लेकिन उसे पता नहीं कि हक्के महर क्या चीज़ है? उसने अपना महर न दिया न महर मुतअ़य्यन किया, अब उसको मालूम हुआ कि महर बीवी का वाजिबी हक़ है जो देना जरूरी है, अब वह क्या करे?

उत्तरः इस सूरत में मालूम किया जाये कि निकाह के वक़्त कितना महर मुकर्रर किया गया था वही अदा किया जायेगा वरना बीवी के खान्दान की औरतों का जो महर हो वही महर दिया जायेगा। मसलन लड़की (बीवी) की बहनों और फूफियों का जो महर होगा वही महर इस शौहर को भी अदा करना ज़रूरी होगा।

(हिदायाः 2/313)

प्रश्नः अगर किसी शख़्स ने मोबाइल से एस.एम.एस. के ज़रिये अपनी बीवी को तलाक़ दी और एतिराफ भी कर रहा है कि मैंने एस.एम.एस. में तलाक़ लिखा है, बीवी कहती है कि मैंने एस.एम.एस. नहीं पढ़ा है, इसलिए तलाक़ नहीं हुई, शरीअते इस्लामी इस बारे में क्या कहती है? क्या मोबाइल के ज़रिये तलाक़ का एस.एम.एस. करने से तलाक़ हो गई या नहीं?

उत्तरः जब शौहर ने बजरिये मोबाईल तलाक़ लिख कर बीवी को एस.एम.एस. किया है और उसे इस का एतिराफ भी है तो इस सूरत में तलाक़ वाक़ेअ़ हो गई। ख्वाह बीवी ने एस.एम.एस. पढ़ा हो या नहीं, याद रहे कि बजरिये मोबाइल ज़बान से बोल कर या एस.एम.एस. के अगर तलाक़ दी जाये तो तलाक़ हो जाती है।

(रद्दुल मुहतारः 4/454)

प्रश्नः फर्ज गुस्ल (जिसे गुस्ले जनाबत कहते हैं) में कानों के अन्दर पानी कैसे पहुँचायें?

उत्तरः फर्ज गुस्ल में कान के नज़र आने वाले अंदरूनी हिस्से तक पानी पहुँचाना ज़रूरी है, और अगर कानों के यह सूराख़ सूखे रह गये तो गुस्ल नहीं होगा, बेहतर तरीक़ा यह है कि सर पर पानी बहाते वक़्त उंगली को तर करके कान के दिखाई देने वाले हिस्से में घुमा ली जाय, कान के पर्दे तक पानी पहुँचाना ज़रूरी नहीं।

प्रश्नः नापाकी की हालत में बाथरूम में जाने से क्या बाथरूम का फर्श नापाक हो जाता है?

उत्तरः सिर्फ नापाकी की हालत में बाथरूम जाने से फर्श नापाक नहीं होता, और जब गुस्ल करते वक़्त पानी बहा दिया गया तो वह भी पाक हो गया, महज शक व शुब्हे की बिना पर फर्श को नापाक समझने की ज़रूरत नहीं।

प्रश्नः दाँतों पर अगर पक्के दाग़ हों या ऐसी पक्की तह जम गई हो जो मिस्वाक या टूथपेस्ट से नहीं हटाई जा सकती हो तो क्या ऐसी सूरत में फर्ज गुस्ल हो जायेगा?

उत्तरः दाँतों पर इस तरह के रंग या दाग़ दाँतों का हिस्सा बन जाते हैं इसलिए इस पर पानी लगना दाँतों पर पानी लगने के कायम मुक़ाम होगा और गुस्ल दुरुस्त हो जायेगा।

❖❖❖

मेरी शरारत

मायल ख़ैराबादी

बहुत दिनों से कुछ ऐसा हो रहा था कि आधी छुट्टी के समय दो तीन लड़कों की कोई न कोई चीज जरूर चोरी हो जाती। किसी की गणित की किताब खो गई, किसी के डेस्क में से कापी गायब, तो किसी का कलम। न जाने कौन चोर था।

दो तीन दिन तो किसी ने इस तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया। लेकिन रोज रोज की चोरी से तो सबको चिन्ता हुई तो लड़कों ने भी अपनी चीजों के प्रति सावधानी बरतनी शुरू कर दी। इस तरह यह हुआ कि चोरी की गति कुछ कम हो गई। फिर भी दूसरे तीसरे दिन किसी न किसी की कुछ न कुछ चीज़ ज़रूर चोरी हो जाती।

आज तो गज़ब हो गया। मेरा नया पेन जो आज ही मामूँजान ने मुझे ला कर दिया था, किसी ने मेरे डेस्क से निकाल लिया। मैंने मास्टर साहब से शिकायत की। लड़कों से पूछा, लेकिन कुछ पता न चला। एक विद्यार्थी के लिये पेन की कीमत बहुत होती है। मेरी नजरों में भी पेन क़ीमती था। इसका इतना असर हुआ कि मास्टर साहब ने इस मामले पर विचार करना शुरू किया। मुझे और कुछ लड़कों को, जिन पर मास्टर जी को विश्वास था, मास्टर साहब ने एक सलाह दी और फिर हर एक के जिम्मे कुछ न कुछ काम सौंपा।

मास्टर साहब ने मुझसे कहा कि तुम मेरा डण्डा अलमारी के पीछे छुपा देना। जब मैं आऊँगा तो अलमारी के पीछे से निकाल लूंगा और फिर सब लड़कों को ध्यान से देख कर तुम्हें पकड़ लूँगा। फिर असलम से कहा कि तुम मेज से दवात उठाकर तोड़ देना, मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, फिर नसीर से कहा तुम चाक को अपने डेस्क में छुपा लेना, मैं वहाँ से निकाल लूँगा, मुनीर से कहा कि तुम कुर्सी को मेज पर रख देना, मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, फिर लड़कों से कहूँगा कि मैंने चोर को भी पहचान लिया है, फिर देखना चोरी का राज कैसे खुलता है।

सुबह मास्टर साहब डण्डा और चाक मेज पर रख कर बाहर चले गये। बहुत से लड़के डर रहे थे आज ख़ुदा बचाये। मैंने उठकर कहा कि भाइयों आज मास्टर साहब कहीं चले गये हैं। आओ शरारत करें। सब लड़के सहमत हो गये। मैंने मेज पर से डण्डा उठा कर अलमारी के पीछे छुपा दिया और खुद अपने डेस्क पर बैठ गया। मेरे बैठने के बाद असलम उठा और उसने मास्टर साहब की दवात को उछालना शुरू कर दिया। दवात उसके हाथ से छूट कर फर्श पर गिर गई और चूर चूर हो गई। असलम ने सब लड़कों से कहा कि भाइयों मास्टर साहब को न बताना वर्ना मेरी शामत आ जायेगी। असलम चुपके से आकर अपनी मेज पर बैठ गया। नसीर ने मेज पर से चाक उठाकर अपनी डेस्क में रख लिया। इसके बाद मुनीर उठा और उसने कुर्सी को उठाकर मेज पर रख दिया।

थोड़ी देर बाद मास्टर साहब आये और मेज पर कुर्सी देख कर बहुत नाराज हुए और कहने लगे सच सच बताओ इस कुर्सी को मेज पर किसने रखा है? जब कोई खड़ा न हुआ तो मास्टर साहब का टेम्प्रेचर एक दम सौ डिगरी तक पहुँच गया। गुस्से की हालत ही में उन्होंने सब लड़कों की तरफ देख कर घूरना शुरू किया। सब लड़के हैरान होकर मास्टर साहब की तरफ देख रहे थे।

''खड़े हो जाओ मुनीर'' मास्टर साहब चिल्लाये और मुनीर खड़ा हो गया, ''बताओ तुमने कुर्सी को मेज पर क्यों रखा है?'' सब लड़के हैरान हो गये कि मास्टर साहब को कैसे पता चल गया। इसके बाद मास्टर साहब ने फर्श की ओर देखा तो और बिगड़े और असलम की तरफ घूर कर कहा, ''क्यों असलम! तूने मेरी दवात क्यों तोड़ी?'' असलम क्या जवाब देता। ''अच्छा यूँ नहीं बताते, डण्डे से तुम्हारी मरम्मत करता हूँ। अरे! यहाँ मेज पर से डण्डा और चाक कौन ले गया।''

फिर बोले, ''मुझे मालूम है कि चाक इस वक़्त नसीर की डेस्क में है।'' फिर उन्होंने नसीर की डेस्क में से चाक निकाल कर सब लड़कों को दिखाया। लड़के और अधिक हैरान हुए कि कहीं मास्टर साहब जादूगर तो नहीं हो गये। मास्टर साहब ने लड़कों को सम्बोधित करके कहा, ''लड़को तुम्हें पता नहीं कि मैं जादूगर हूँ। तुम जो कुछ करते हो मुझे मालूम है, तुम सब बताओ कि वास्तव में इन्होंने ही शरारत की थी?'' ''जी हाँ'' सब लड़कों ने एक साथ कहा।

''तो फिर इन तीनों को सजा मिलनी चाहिये, लेकिन डण्डा, ठहरो वह भी मालूम हो गया है।''

मास्टर साहब ने लपक कर अलमारी के पीछे से डण्डा निकाल लिया और फिर मुझसे कहा, ''क्यों गुलाम हुसैन! तुमने अलमारी के पीछे डण्डा क्यों छुपाया?''

फिर ज़रा रुक कर बोले, ''ठीक है तुम चारों को फिर देखूँगा। अब मैं उस चोर को पकड़ूंगा जो लड़कों की चीजें चुराता है।''

यह कह कर मास्टर साहब ने सब लड़कों को बड़े ध्यान से देखना शुरू किया। ''मार लिया'' कह कर मास्टर साहब उछल पड़े। ''चोर पकड़ लिया'' मास्टर साहब खुश होकर चिल्लाये। सब लड़कों ने जिज्ञासा पूर्वक पूछा कि चोर कौन है?

मास्टर साहब ने कहा, ''मुझे चोर पर दया आती है इसी लिये उसकी भलाई इसी में है कि आज मेरे घर आकर सब लड़कों की किताबें, पेन आदि दे जाये तो उसे क्षमा कर दूंगा और उसका नाम भी किसी को न बताऊँगा। अगर उसने ऐसा न किया तो उसे दण्ड भी दूँगा और उसका मुँह काला करके स्कूल से निकाल दूँगा''।

सुबह को जब हम स्कूल गये तो मास्टर साहब ने बताया कि मेरी चाल सफल रही। कल शाम को वह लड़का सब सामान मेरे पास ले आया था और उसने क्षमा मांगी थी कि आइन्दा ऐसी हरकत नहीं करूँगा। इसलिये मैंने उसे क्षमा कर दिया और उसका नाम भी नहीं बताऊँगा।

सब लड़कों ने तालियाँ बजाईं और अपनी अपनी चीजें ले लीं। मुझे भी मेरा पेन मिल गया। जो खुशी उस समय हुई बयान नहीं कर सकता। आज उस घटना को कई वर्ष बीत चुके हैं और हमारी कक्षा में कभी चोरी नहीं हुई। जब भी वह घटना याद आती है तो मास्टर साहब की बुद्धिमानी की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

न्याय के साथ या अन्याय के खिलाफ़?

डॉ0 प्रदीप कुमार

उत्तर प्रदेश के संभल में मुग़लकालीन शाही जामा मस्जिद में कोर्ट के आदेश पर हुए सर्वेक्षण को लेकर भड़की हिंसा के चंद दिनों बाद ही राजस्थान के अजमेर की एक स्थानीय अदालत ने 13वीं सदी की अजमेर शरीफ़ दरगाह में सर्वेक्षण की मांग वाली याचिका स्वीकार कर ली। देश के विभिन्न हिस्सों में इसी तरह की कई याचकाएं लंबित हैं जो दावा करती हैं कि हिन्दू मंदिरों के स्थल पर कथित तौर पर मस्जिदें या दरगाहें बनाई गई हैं।

उत्तराखण्ड में उत्तर काशी मस्जिद, यू0पी0 में ज्ञानव्यापी मस्जिद और कर्नाटक में हुबली ईदगाह सहित कई स्थलों के मामलों में यही पैटर्न देखने को मिला। ऐसे मामलों में वृद्धि चिंता और निराशा का विषय तो है ही, साथ ही ये मामले पूजा स्थल अधिनियम, 1991 की प्रसांगिकता पर भी सवाल उठाते हैं, यह अधिनियम अयोध्या मामले को छोड़ कर 15 अगस्त 1947 को मौजूद किसी भी पूजा स्थल के धार्मिक चरित्र को बदलने पर रोक लगाता है।

उल्लेखनीय है कि ज्ञानवापी मामले में भरत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चन्द्रचूड़ की अध्यक्षता वाली शीर्ष अदालत की पीठ द्वारा 2022 में की गई टिप्पड़ी कि यह अधिनियम किसी पूजा स्थल के धार्मिक चरित्र का पता लगाने पर स्पष्ट रूप से रोक नहीं लगाता–से निचली अदालतों को ऐसी याचिकाओं पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इसका नतीज़ा यह हुआ कि आज जिलों में तमाम मस्जिदों के धार्मिक चरित्र की जांच करने की मांग होने लगी है।

संभल जैसे मामले देश में ''एक धर्म, एक समुदाय और एक संस्कृति की सर्वोच्चता'' स्थापित करने के एक सनकी एजेंडे को दर्शाते हैं। इसके तहत, समानता और विविधता, लोकतंत्र और संविधान को कमज़ोर करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

हालांकि सुप्रीम कोर्ट के ताज़ा फ़ैसले से उम्मीद की किरण जगी है। सुप्रीम कोर्ट ने संभल कोर्ट की कार्यवाही पर रोक लगा दी है और मस्जिद समिति को हाई कोर्ट जाने को कहा है, साथ ही इस बात पर ज़ोर दिया है कि शांति और सदभाव क़ायम रहना चाहिए, लेकिन विघटन कारी तत्वों द्वारा ऐसी जगहों को निशाना बनाना दुर्भाग्यपूर्ण है।

संभल में क्या हुआ और कैसे हुआ इसका दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए। इस विवाद को सियासी या सांप्रदायिक पाले में नहीं छोड़ा जा सकता। यह जांच निष्पक्ष रूप से यथोचित मक़ाम पर पहुँचनी चाहिए, ताकि सांप्रदायिकता की चिंगारी को न्याय की शीतल छाया में बुझाया जा सके। जिस तरह का अविश्वास संभल में दिख रहा है उसे देखते हुए कार्यपालिका और न्याय पालिका को पूरी तरह सचेत रहना होगा। फ़ैसले बिल्कुल क़ानून के अनुरूप करने होंगे अभी देश अपने संविधान की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है और संविधान की बुनियाद भी सद्भाव पर टिकी है।

आज सरकार की ज़िम्मेदारी तो है ही, आम लोगों पर भी बड़ी ज़िम्मेदारी है। किसी को भी यह इजाज़त नहीं है कि वह क़ानून को अपने हाथ में ले। साथ ही, जनप्रतिनिधियों को भी निष्पक्ष भाव से जन सेवा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अगर वोट बैंक के आधार पर देखा जाएगा, स्थानीय संख्या बल के आधार पर देखा जाएगा, तो हम आसानी से समाधान तक नहीं पहुंच पाएंगे। सद्भाव का मार्ग खुले, सहज मन

से ही यह तै होता है। सामाजिक नेताओं को भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी उपद्रव के समय स्वार्थवश पक्षपाती या अधूरा सच बोलना परोक्ष पत्थर बाज़ी से कम नहीं है।

काशी, मथुरा, भोजशाला, संभल, अजमेर और ऐसे ही न जाने कितने विवाद के मोर्चे सुलग रहे हैं। अतः यह संभल कर चलने का समय है। ऐसे में न्याय के मंदिरों को ज़्यादा सजग रहना होगा। ऐसे मामलों में पूरी तरह से तार्किक और तथ्य आधारित बने रहने में ही सबका भला है। भावनाओं में बह कर फ़ैसला लेने या घातक टिप्पड़ी करने की इजाज़त संविधान भी नहीं देता। अदालतों की राई समान दलील भी बाहरी समाज में पहाड़ बन कर खड़ी हो सकती है।

उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट में पिछले दो साल से कई याचकाएं लंबित हैं, जिसमें धार्मिक स्थल क़ानून 1991 की वैधानिकता को चुनौती दी गई थी। इसी कोर्ट के एक आदेश में कहा गया था कि किसी धर्म स्थल का धार्मिक स्वरूप वैज्ञानिक सर्वे के आधार पर सुनिश्चित करना इसके स्वरूप को बदलना नहीं होगा। इसके बाद निचली अदालतों में लगातार अनेक मस्जिदों को हिन्दू मंदिरों के भग्नावषे पर खड़ा होने के दावे आने लगे। सांप्रदायिक तनाव बढ़ने लगा।

संभल में प्रशासन और मुस्लिम समुदाय के बीच झड़प के बाद अब अजमेर शरीफ़ को शिव मंदिर के मलवे से बनाए जाने के दावे वाली याचिका पर कोर्ट ने ए0एस0आई0, अल्प संख्यक मंत्रालय और दरगाह के इन्तिज़मिया को नोटिस भेजा है। विश्व हिन्दू परिषद मानता है कि 40 हज़ार मंदिरों को तोड़ कर मस्जिद बनाई गई है। यानी सिलसिला लगातार चलता रहेगा। यह समय है कि सुप्रीम कोर्ट धार्मिक स्थल अधिनियम 1991 की वैधानिकता और उसके प्रावधान 3 और 4 की स्पष्ट व्याख्या करे।

संसद ने इस क़ानून के ज़रिये अन्य धार्मिक स्थलों में संभावित विवाद पर हमेशा के लिए एक रोक लगाई। प्रावधान कहता है कि 15 अगस्त 1947 के दिन तक जिस धार्मिक स्थल का जो स्वरूप था, वह न तो बदला जा सकता है और न ही कोई कोर्ट इससे संबंधित कोई वाद सुनेगी। अब सुप्रीम कोर्ट को तय करना है कि यह क़ानून जो भारतीय समाज में शान्ति ला सकता है, संविधान सम्मत है या नहीं। अनेकता में एकता भारत की बड़ी ख़ूबी है, जिसे बनाए रखने की ज़िम्मेदारी हम सभी पर है। ◆◆◆

—:ऐलान:—

प्रिय पाठको: देश में बढ़ती मंहगाई से आम जन मानस त्रस्त है हम भी उससे अछूते नहीं, काग़ज़ की मंहगाई, प्रिटिंग और पेस्टिंग के बढ़ते खर्चे हमें ये ऐलान करने पर मजबूर कर रहे हैं कि फरवरी 2025 के अंक से ''सच्चा राही'' का वार्षिक सहयोग ₹400/- और एक प्रति का मूल्य ₹40/- कर दिया गया है, हमें आशा है कि हमारे पाठक इस इज़ाफे (वृद्धि) को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करते हुए अपना सहयोग ज़ारी रखेंगे।

धन्यवाद
(प्रबन्धक)

समाज सुधार

अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

भारत की महिमा बहुत बड़ी, भारत को भारत रहने दो।
नेता, अभिनेता, कवि, लेखक, भारत को भारत रहने दो।।

जो जन प्रतिनिधि हों, नेता हों, वह सभ्य समाज की बात करें।
वह कटु वचन को मत बोलें, भारत को भारत रहने दो।।

प्रेम, अहिंसा, भाई चारा, यह नेता का असली गुण।
अपशब्द की भाषा मत बोलो, भारत को भारत रहने दो।।

कुछ अभिनेता, अभिनय कर, अश्लील प्रदर्शन करते हैं।
अश्लील प्रदर्शन को रोको, भारत को भारत रहने दो।।

नग्न प्रदर्शन भारत में अब, आम ही होता जाता है।
नग्न प्रदर्शन को रोको, भारत को भारत रहने दो।।

कविता भी अश्लील न हो, उत्तम प्रभाव प्रदर्शित हो।
साहित्य समाज का दर्पण है, भारत को भारत रहने दो।।

ऋषि, मुनि और वलियों का, जीवन परिचय प्रदर्शित हो।
आदर्श वचन की कविता हो, भारत को भारत रहने दो।।

लेख सुलेख रहे सब का, जिससे समाज प्रभावित हो।
आदर्श पुरुष भारत में बनें, भारत को भारत रहने दो।।

साहित्यिक लेख प्रदर्शित हों, गन्दे लेख पे रोक लगे।
व्यभिचारी प्रदर्शन बन्द करो, भारत को भारत रहने दो।।

सभ्य समाज भारत का रहे, सिद्दीक़ी की अभिलाषा है।
अन्धकार को दूर करो, भारत को भारत रहने दो।।

❖❖❖

कुरआन का संदेश समस्त मानव जाति के नाम

मौलाना इक़बाल नदवी

प्रकृति का नियम है जब अन्धेरा अपने अंतिम चरण में होता है तो प्रकाश उसके सीने को चीरते हुए फैलने लगता है और सारा संसार जगमगाने लगता है। संसार के पालनहार ने मानवीय जीवन में प्रकाश पैदा करने के लिए अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के माध्यम से एक पुस्तक भेंट की जिसको कुरआन कहते हैं। छठी शताब्दी में मानवीय जीवन का पतन हो चुका था मानव एक ईश्वर की भक्ति व आराधना करने के बजाय पेड़ पौधों, पत्थरों यहां तक कि जानवरों की पूजा करते थे सामाजिक जीवन बुरी तरह बिगड़ा हुआ था नैतिकता शिष्टता का दिवाला निकल चुका था ऊँच–नीच छुआ–छूत असमानता अपने चरम सीमा पर थी छोटी छोटी बातों पर चालीस चालीस वर्षों तक युद्ध चलता रहता, अति तुच्छ बातों पर प्राण ले लेना खेल समझा जाता, स्त्रियों को विधवा बना देना उनकी रीति रिवाज बन गया था। पिता की विधवा से सौतेले बेटे का विवाह करा दिया जाता, बाप अपनी नन्हीं सी पुत्री को जीवित पृथ्वी में धंसा देता, मानव की इस स्थिति पर ईश्वर को दया आई तथा उसने अंतिम संदेष्टा पर अंतिम पुस्तक अवतरित की कुरआन ने समस्त लोगों को एकेश्वरवाद की तरफ़ बुलाया, समाज में फैली हुई अनेकों प्रकार की बुराईयों को समाप्त किया। मदिरा पीना, जुआ खेलना, स्त्रियों का अपमान करना, अनाथ बच्चों की जायदाद को हड़पने जैसी समस्त निन्दनीय बुराईयों को ख़त्म करके मानवीय जीवन में उच्च आदर्श, संस्कार, ज्ञान विवेक, प्रेम व भाईचारे का व्यवहार सब के साथ सदाचार आदर सम्मान से पेश आने का संदेश दिया।

कुरआन ने नन्ही बच्चियों को जीवित धरती में धंसा देने का खुलकर विरोध किया कि कल प्रलय के दिन ईश्वर उस बच्ची से पूछेगा कि बता किस कारण तुझे जीवित पृथ्वी में धंसा दिया गया था और उस हत्यारे पिता की ओर दया की दृष्टि से नहीं देखेगा। कुरआन के आने से अन्धकार अपने पैर समेटने लगा, जुल्म व अत्याचार के ज़रिये समाज में श्रेष्ट बनने की भावना को नष्ट किया जिसका जो अधिकार है उसको दिलाने के लिए समाज को उठ खड़े होने पर उभारा, कुरआन केवल एक इतिहास ही नहीं है बल्कि वह कुदरत की ओर से इस धरती पर एक ऐसा विधान है जो अम्न व शांति, सुख, चैन से जीवन व्यतीत करने का आदेश देता है। उसकी मुख्य शिक्षाओं में से है एक सर्वशक्तिमान ईश्वर पर भरोसा और ईमान लाना उसी की पूजा करना माता–पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना झूठ न बोलना, किसी की हत्या न करना बुरी नज़र से ना देखना पड़ोसियों के साथ अचछाई से पेश आना किसी की निन्दा न करना किसी के पाप और गुनाहों में भागीदार न बनना, किसी को धोखा न देना किसी के साथ विश्वासघात न करना, बड़ों का आदर सम्मान करना, छोटों पर दया करना मदिरा न पीना, जुआ न खेलना, ब्याज का कारोबार न करना सच्चाई के साथ सदैव खड़ा रहना, अनाथ

बच्चों पर करूणा की भावना उतपन्न करना, भली स्त्रियों पर कटाक्ष न करना उन पर किसी प्रकार का झूठा आरोप न लगाना मानवीय अधिकारों का हनन न करना कारोबार में ईमानदारी का प्रदर्शन करना रिश्वत के दरवाज़े न खोलना किसी को अपमानित शब्दों से न पुकारना, किसी का मज़ाक न उड़ाना अतिथियों व मेहमानों का सम्मान करना रिश्ते नातों को न तोड़ना, सबके साथ न्याय करना चाहे वह तुम्हारे विरोधी और शत्रु ही क्यों न हों। उसकी दृष्टि में न्याय करने में जानबूझ कर विलम्ब करना किसी अन्याय से कम नहीं है ज़मीन में बिगाड़ करने वालों को ईश्वर पसंद नहीं करता है उसने मृत्यु के बाद स्वर्ग तथा नर्क का वर्णन किया कुरआन ने स्त्रियों को सम्मान दिया उनके साथ नर्मी करने का संदेश दिया उनके जीवन को पुरुषों के जीवन के बराबर होने को बताया, उसने कहा कि अन्धेरा और प्रकाश बराबर नहीं हो सकते उसकी निगाह में समस्त मानव बराबर हैं किसी में कोई ऊँच–नीच नहीं उसने कहा कि ऐ संसार में बसने वाले प्राणियों, ईश्वर ने तुम सब को एक नर नारी से पैदा किया तथा तुमको अनेकों वर्गों में इसलिए बाँट दिया कि तुम एक दूसरे को पहचान सको ईश्वर के निकट वह सब से अधिक उससे डरने वाला होगा उसने संदेश दिया कि तुम धरती वालों पर दया व करुणा के साथ व्यवहार करो आकाश वाला तुम पर दया करेगा, इस्लाम को स्वीकार करने या न करने में सम्पूर्ण सवतंत्रता प्रदान की जिस का जी चाहे इस्लाम के साये में आये जिसका जी न चाहे वह आज़ाद है वह एक अच्छे और सभ्य समाज की सदैव आज्ञा देता है उसकी दृष्टि में ईश्वर के साथ साझीदारी करना महा पाप है और संसार का सबसे बड़ा जुल्म है धरती पर घमण्ड और अकड़ कर चलने से माना किया, घिनौने और निन्दनीय कार्यों के निकट जाने से भी रोका, कुरआन की इन आदर्शीय शिक्षाओं ने मानवीय जीवन में बड़ा प्रभाव डाला जिससे ऐसा परिवर्तन हुआ कि इतिहास में उसका उदाहरण नहीं मिलता। इस संसार में अनेकों समाज सुधारक पैदा हुए अनेकों समाज के लिए अच्छे कार्य किए मगर आज वास्तविक तौर से किसी का संदेश और उसकी सम्पूर्ण शिक्षा हमारे सामने मौजूद नहीं है अशोक सम्राट का संदेश कुछ पत्थरों पर लिखा दिखाई देता है मगर जीवन कैसे व्यतीत करें इसके बारे में वह खामोश हैं। किसी के उच्च आदर्शीय संदेश एक समय तक ही सीमित रहे मगर कुरआन के संदेश को साढ़े चौदह सौ वर्षों से लोग बड़ी तेज गति से अपने जीवन में उतार रहे हैं इस मधुर ईशवाणी से लोगों के हृदय स्वच्छ और एक निर्मल धारा की तरह साफ और पवित्र हो रहे हैं इसके अन्दर जन्म से मृत्यु तक जीवन का ऐसा कोई विभाग नहीं है जिसमें कुरआन की शिक्षा ने प्रकाश न डाला हो। मृत्यु के बाद एक मनुष्य के साथ क्या होगा बड़े विस्तार से उसका वर्णन है उसके संदेश ने घृणा नफ़रत को समाप्त करके प्रेम व भाईचारे की ज्योति जलाई, देखते ही देखते जीवन की काया पलट गई कुरआन का यह संदेश प्रलय की सुबह तक रहेगा।

कुरआन के उक्त संदेशों को पढ़ने समझने और दूसरों तक पहुँचाने का कर्तव्य मुस्लिम समुदाय का बनता है ताकि कुरआन और इस्लाम के प्रति जो झूठी घृणा फैलाई गई है वह सच्चाई के इस प्रकाश से नष्ट हो जाये।

❖❖❖

लेखकः माहद सिकरोरी के उस्ताद हैं

बाबरी मस्जिद की शहादत

इदारा

बाबरी मस्जिद का ज़ख़्म एक ऐसा ज़ख़्म है जो वक़्त के साथ न तो भर सकता है और न ही उसकी शिद्दत में कमी आ सकती है, ये ज़ख़्म पूरी ज़िन्दगी ताज़ा रहेगा, 6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद की शहादत न केवल हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिए दुर्घटना है बल्कि उस दिन जमहूरियत, सेकुलरिज़्म और क़ानून की बालादस्ती को भी शदीद नुक़सान पहुँचा, हज़ारों उग्रवादियों की भीड़ ने क़ानून की धज्जियाँ उड़ाते हुए बाबरी मस्जिद को शहीद कर दिया। ये अमल केवल एक मस्जिद को शहीद करने तक सीमित नहीं था बल्कि मुसलमानों के जज़बात और उनके एतिमाद को कुचलने की एक कोशिश थी, इस घटना ने न केवल मुसलमानों के दिलों को चीर कर रख दिया बल्कि हिन्दुस्तान की सेकुलिरिज़्म को भी शर्मसार किया। उस दिन न सिर्फ़ एक मस्जिद को शहीद किया गया बल्कि एक क़ौम की भावनाओं को भी रौन्द दिया गया उस दिन मुल्क के अल्पसंख्यकों को यह एहसास दिलाया गया कि उनकी इबादतगाहें भी सुरक्षित नहीं हैं और उनके साथ न्याय की उम्मीद एक ख़्वाब बन चुकी है। बाबरी मस्जिद जिसका निर्माण 1528 ई0 में मुग़ल बादशाह बाबर ने करवाया था केवल एक इबादतगाह नहीं बल्कि मुसलमानों के इतिहास और संस्कृति का हिस्सा थी। पाँच शताब्दियों तक यह मस्जिद अल्लाह के बन्दों की नमाज़ों से आबाद रही लेकिन सामप्रदायिकता और राजनीति की छाया में उसे निशाना बनाया गया। मुसलमानों ने बाबरी मस्जिद के मामले में क़ानूनी रास्ता इख़्तियार किया और उन्हें सुप्रीम कोर्ट से बहुत आशाएं थीं, इसी आशा में वर्षों तक न्याय के लिए अदालतों के चक्कर काटे गये लेकिन साल 2019 में सुनाये गये सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने इस ज़ख़्म को और गहरा कर दिया कोर्ट ने स्वीकार किया कि मस्जिद का वजूद था, इसमें नमाज़ होती थी और उसे ग़ैर क़ानूनी तौर पर शहीद किया गया लेकिन फिर भी आस्था की बुनियाद पर फ़ैसला सुनाया गया इस फ़ैसले ने मुसलमानों को मायूसी और बेबसी के एहसास में मुब्तला कर दिया, बाबरी मस्जिद की शहादत का ग़म केवल एक नस्ल तक सीमित नहीं रहेगा, यह ग़म नस्ल दर नस्ल मुनतक़िल होता रहेगा। हम अपनी औलाद को इस घटना की दास्तां सुनाएंगे, उन्हें बताएंगे कि हमारी इबादतगाह को किस तरह शहीद किया गया और हमने उसकी हिफ़ाज़त के लिए कैसी जद्दोजहद की, बाबरी मस्जिद की कष्ट दायक घटना एक सबक़ भी है। हमें अपनी मस्जिदों को आबाद रखने उनकी हिफ़ाज़त के लिए एकजुट होने और अपनी इबादतगाहों की अहमियत को समझने की ज़रूरत है।

बाबरी मस्जिद की शहादत आज भी मुसलमानों के दिलों में ताज़ा है, 6 दिसंबर 1992 का दिन मुसलमानों के लिए न केवल एक इबादतगाह की शहादत का दिन था, बल्कि यह उनके ईमान, मान सम्मान और इन्साफ़ पर एक शदीद हमला था, उस दिन की याद आज भी ग़म और कष्ट के जज़्बात (भावनाओं) को उभारती है लेकिन अब वही दर्द और बढ़ रहा है क्योंकि अब

शेष पृष्ठ....38....पर

मानवता सन्देश

शारिक़ अलवी

पिछली शताब्दी के अर्ध अन्त काल में देश के विभिन्न भागों में भयानक साम्प्रदायिक दंगे हुए, जिन में सैकड़ों इन्सानी जानें गईं और करोड़ों रूपयों का सामान नष्ट हो गया, सूरते हाल इतनी ख़राब हो गई कि लगता था कि अब अल्पसंख्क सामप्रदाय को इस देश में रहना दुशवार हो जाएगा ऐसे अशान्ति और उपद्रव के माहौल में मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 उठ खड़े हुए और ''मानवता सन्देश'' की बुनियाद डाली, और कुछ न्याय प्रिय हिन्दुओं को ले कर देश का भ्रमण किया, उनके साथ पंण्डित सुन्दर लाल जैसा खुले दिमाग़ का एक प्रसिद्ध राजनेता भी था, मौलाना विभिन्न स्थानों पर मानवता का सन्देश लेकर घूम रहे थे और उपदेश दे रहे थे कि हिन्दुओं और मुसलमानों को मिल जुल कर रहना चाहिए और इतिहास का संदर्भ देते थे, पूर्व काल में दोनों क़ौमों में प्रेम और मुहब्बत को याद दिलाते थे, उनका मानना था कि अंग्रेज़ों के ''लड़ओ और हुकूमत करो'' की पालिसी ने समाज में सामप्रदायिकता का ज़हर घोल दिया है, मौलाना आचार्य विनोवा भावे के पास भी गये और उनसे अपने मानवता सन्देश आन्दोलन में शामिल होने का अनुरोध किया, आचार्य विनोवा भावे ने इस आन्दोलन से अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, परन्तु अपनी दीर्घ आयु और शारीरिक दुर्बलता के कारण मानवता सन्देश आन्दोलन में शिरकत से विवश रहे। बहरहाल मौलाना का प्रोग्राम ''मानवता सन्देश'' बराबर चलता रहा और हर जगह वह हिन्दू और मुसलमानों को एक साथ मुहब्बत के साथ रहने का उपदेश देते रहे। मौलाना का ख़्याल था कि दो सामप्रदायों में जो घृणा पैदा हो गई है उसकी एक वजह दोनों की एक दूसरे से दूरी है, आपस के मेलजोल से भ्रान्तियां दूर होती हैं और एक दूसरे से क़रीब आने में शक्ति मिलती है, मौलाना की इस सोच और प्रेरणा को एक उदाहरण द्वारा अधिक लाभदायक बनाना चाहता हूं 1961 ई0 में मुझे सरकारी नौकरी के समय छः महीने के प्रशिक्षण कोर्स में कोलकाता भेजा गया जहां हमें रहने के लिए अधिकारियों के अतिथि गृह में एक कमरा दिया गया, उसमें आराम से रहता था, दो हफ़्ते बाद उत्तर प्रदेश से एक और अधिकारी वहां ट्रेनिंग के लिए आए, मेरे ही डिपार्टमेंट के साथी थे और उनसे अच्छी मुलाक़ात थी, लेकिन चूंकि वह आर0एस0एस0 की ट्रेनिंग पाए हुए थे, इसलिए मुसलमानों से दूर ही नहीं रहते थे बल्कि घृणा करते थे जैसा कि उनके रवय्ये से मालूम होता था, बहरहाल कोलकाता जब वह आए तो अधिकारियों के अतिथि गृह में कोई कमरा खाली नहीं था और उनसे कहा गया कि वह अपने रहने का प्रबंध स्वयं करलें, चुनांचि एक होटल में ठहर गये, चार पाँच दिन बाद मुझसे उन्होंने अपनी परेशानी बताई और बोले मुझे बहुत दूर से आना पड़ता है इसके अलावा होटल का ख़र्च भी बहुत है।

मैंने उनसे बिला झिझक कहा, आप मेरे साथ रहिए मुझे कोई आपत्ति नहीं, अच्छा समय गुज़रेगा, वह परेशान तो थे ही, मेरा प्रामर्श तुरन्त स्वीकार कर लिया, और अगले दिन अपना सामान ले कर आ गये। शुरु के कुछ दिनों मैंने महसूस किया उनको मुसलमान के साथ रहने में कुछ हिचकिचाहट हो रही है लेकिन रफ़्ता–रफ़्ता वह दूर हो गई जब उन्होंने देखा कि मैं इतनी सरदी में भी सुबह नहा

कर नमाज़ पढ़ता हूं, साफ़ कपड़े बदलता हूं, और उनसे किसी प्रकार की भी सामप्रदायिक दूरी नहीं रखता हूं, वह पूर्ण रूप से शाकाहारी थे, जबकि मेरे लिए सुबह नाशते में अन्डा वगैरह आता था, और खाना भी मेरे मिज़ाज के अनुकूल होता था, लेकिन मैंने उनकी वजह से अण्डा गोश्त वग़ैरा छोड़ दिया था, और शाकाहारी हो गया था। ये सिलसिला जैसे जैसे बढ़ता जा रहा था वैसे वैसे उनकी नज़दीकी भी मुझसे बढ़ रही थी, कभी अगर मैं नमाज़ में कुछ सुस्ती दिखाता तो वह तुरन्त टोक देते, और कभी कभी मेरे वज़ू के लिए गरम पानी भी ला कर रख देते थे। ग़रज़ कि साढ़े पाँच महीने उनके साथ बहुत हंसी ख़ुशी गुज़रे और मुझे पूरा अन्दाज़ा हो गया कि मुसलमानों के बारे में जो उन्हें ग़लत फ़हमियाँ थीं वह दूर हो गईं। अब मेरे रूख़सत होने का वक़्त आ गया था, बल्कि उन्हें पन्द्रा दिन वहां मेरे बाद ज़्यादा रहना था, उन्हें तनहाई की फ़िक्र सता रही थी, मैं आने लगा तो वह मुझे हावड़ा स्टेशन अलविदा कहने आए और चलते वक़्त डबडबाती आँखों से आँसू पोछते हुए बोले कि मैंने ऐसा मुसलमान नहीं देखा था, मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा, यह छोटा क़िस्सा ''आप बीती'' आपसी मेल जोल के महत्व का दर्पण है। मुसलमानों को चाहिए कि वह ग़ैर मुस्लिमों के दिल में जो भ्रान्तियाँ हैं उन्हें अपने आचरण से दूर करने का प्रयत्न करें और इस प्रकार मौलाना अली मियाँ रह0 के ''मानवता सन्देश'' को आगे बढ़ाएं और फैलाएं ताकि मानवता का विकास हो सके और दुनिया में शान्ति का माहौल बने। पहले से कहीं ज़्यादा इस मानवता की आवश्यकता है।

❖❖❖

पृष्ठ...36...का शेष..

अन्य मस्जिदों, दरगाहों और ख़ानख़ाहों पर दावे किए जा रहे हैं, यहां यह ज़िक्र बेजा न होगा कि बाबरी मस्जिद ने मुसलामनों के लिए एक स्पष्ट पैग़ाम छोड़ा था कि भविष्य में उनकी अतिरिक्त इबादतगाहों को निशाना बनाया जा सकता है, यह घटना अन्तिम नहीं थी बल्कि एक निश्चित योजनाओं और षणयंत्र का आरम्भ था, अयोध्या के बाद मथुरा और काशी के अलावा अन्य पवित्र स्थानों को निशाना बनाया गया, हद तो यह हो गयी कि अब दरगाह अजमेर शरीफ़ पर भी दावा कर दिया गया है यह स्थान जो एकता और प्रेम के चिन्ह थे अब नफ़रत और सियासत के जाल में घसीट दिये गये हैं। इन ऐतिहासिक और धार्मिक स्थानों के विषय में दावे किये जा रहे हैं कि इनका निर्माण किसी और धर्म के आसार पर किया गया है इन दावों द्वारा देश में अधिक से अधिक सामप्रदायिकता को हवा दी जा रही है और मुसलमानों की भावनाओं को ठेस पहुँचाई जा रही है।

बाबरी मस्जिद का ग़म हमें यह सबक़ देता है कि हमारी मस्जिदें हमारी इबादतगाहें केवल इमारतें नहीं हैं बल्कि हमारे ईमान की बुनयाद हैं, यह हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी रक्षा करें उन्हें आबाद रखें और उनकी पवित्रता को बरक़रार रखें, यह हालात मुसलमानों के लिए बड़ी परीक्षा हैं। वह पहले ही बाबरी मस्जिद के ग़म को सीने में दबाये हुए हैं और अब अधिक पवित्र स्थानों के लिए परिश्रम करने के लिए मज़बूर हैं लेकिन इन परिक्षाओं ने उनके संकल्प को कमज़ोर नहीं किया, मुसलमान अपनी मज़हबी वरसे की हिफ़ाज़त के लिए पूरी दृढ़ता के साथ जमे हुए हैं और शांतिपूर्ण ढंग से अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठा रहे हैं।

(साभार, डेली एतिमाद हैदराबाद)

❖❖❖

रोटी

—इदरा

तीन दिन गुज़र चुके थे, लाइन में खड़े रह कर भी आटा नहीं मिल रहा था। आज भी घर बिना आटे के जाना पड़ेगा।

यूटीलिटी स्टोर पर आटा ख़त्म हो चुका था। क्योंकि सारा आटा ट्रक भर भर कर इमदादी कैंप पहुँचाया जा रहा था जहाँ मुफ़्त तक़सीम किया जा रहा था। उसी लाइन में राशिद तीन दिन से ख़ड़ा हो रहा था। कुछ लोग रोज़े की हालत में बेहोश हो रहे थे। कुछ चकरा कर गिर रहे थे। लेकिन पेट का दोज़ख भरने के लिए दुबारा लाइन में लगे थे।

''जी आप उसके अहल नहीं'' एक बड़ी सी मूँछों वाले आदमी ने राशिद की बारी आने पर उसे दो टूक जवाब दे दिया।

''जी ये आटा उनको मिलेगा जिनका कोई रोज़गार नहीं। आप तो किसी कंपनी में मुलाज़िम हैं'।

''जी मुलाज़िम हूं, लेकिन मेरी तनख्वाह का आधा हिस्सा बिजली व गैस के बिल, बच्चों की फ़ीस और मकान के किराए पर लग जाता है। मैं आम दुकानों से इतना महंगा आटा नहीं खरीद सकता एक यूटीलिटी स्टोर से लेता था वहां से भी लोगों ने आटा ग़ायब करा दिया और यहां मुफ़्त के नाम पर आटा दे रहे हैं, वह भी इतनी ज़िल्लत उठा कर कि किसी को मिल रहा है और किसी को नहीं'। राशिद ने तीन दिन का गुस्सा उस आदमी पर निकाल दिया।

''अरे भाई टाइम बर्बाद न करें। हम तो मुलाज़िम हैं, हमें जो कहा जाएगा वही करेंगे यह कह कर मुलाज़िम दूसरे लोगों की तरफ़ मुड़ गया।

राशिद मायूसी से क़दम उठाते कैंप से बाहर निकल गया। आज फिर खाली हाथ जाना पड़ेगा। महीने के आखिर में तो इतने पैसे भी नहीं होते कि आटा ख़रीद सकूं। तीन दिन से बीवी बच्चे दाल पका कर खा रहे हैं। राशिद की सोचें उसके क़दमों को मज़ीद भारी कर रही थीं। किसी के आगे हाथ फैलाते हुए उसे शर्म आती थी। बस एक अल्लाह से ही अपनी ज़रूरत पेश कर रहा था।

अचानक कानों में एक आवाज़ आई ''बाजी सूखी रोटी दे दूँ''। राशिद ने आती हुई आवाज़ की ओर देखा, जहां फटे पुराने कपड़ों में एक नौउम्र लड़का कंधे पर बासी रोटी का थैला लटकाए इधर उधर देख रहा था। राशिद तेज़ी से उसकी ओर लपका और इससे पूछा कि ''ये बासी रोटी तुम कितने की दो गे?''

नौजवान ने उसे सर से पांव तक हैरत से देखा और पूछा ''क्या तुम बासी रोटी लोगे?

''हाँ मुझे ज़रूरत है।' राशिद ने झिझकते हुए कहा।

''अच्छा अगर ये बात है तो ऐसे ही ले लो'' लड़के ने थैला उसकी तरफ़ खोल कर आगे रख दिया।

राशिद ने उस लड़के की ओर हैरत से देखा जिसका रोग़गार इन टुकड़ों को जमा करने पर निर्भर था। वह राशिद को ऐसे ही देने पर तैयार हो गया था।

''नहीं तुम मुझे उसकी क़ीमत बताओ, मैं खरीद लूंगा।''

''भाई ऐसे ही ले लो मैं दुबारा जमा कर लूंगा। आपको ज़्यादा ज़रूरत है तब ही तो आप बासी रोटी लेना चाहते हैं।' इस लड़के ने दो तीन थैलियां राशिद की ओर बढ़ा दीं और फ़ौरन वहां से चलता बना।

राशिद शुक्र भरी नज़रों से उसे जाते देखता रह गया। ये रोटी ही उसकी बीवी बच्चों की भूक को मिटा सकती थी, लेकिन साथ ही उसके बारे में भी सोच रहा था कि मैले कपड़ों में दिल का अमीर आदमी पहली बार देखा था।

❖❖❖

गजक में होते हैं गजब के गुण, रहते हैं फिट

डॉ0 धर्मेन्द्र

सर्दियों में गजक खाना बहुत लोगों को पसंद भी होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं गजक सिर्फ स्वाद ही नहीं बल्कि सेहत के लिए भी बहुत लाजवाब होता है। गजक में कई ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर को अंदर से मजबूत बनाने का काम करते हैं। इसके फायदों पर एक नजर–

हड्डियों को मिलती मजबूतीः-

गजक खाने से दांतों और हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद मिलती है। दरअसल, गजक बनाने में गुड़ और तिल का इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए इसमें प्रचुर मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है। कैल्शियम दांतों और हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करता है।

पाचन में भी कारगरः-

अगर आप अक्सर पाचन संबंधी समस्याओं से परेशान रहते हैं तो गजक बेहतर विकल्प हो सकता है। सर्दियों में इसके सेवन से आपका मेटाबॉलिजम मजबूत होता है। साथ ही इसमें मौजूद फाइबर की भारी मात्रा आपको कब्ज और गैस जैसी पेट की परेशानी से भी राहत दिलाती है।

ब्लड प्रेशर करे कंट्रोलः-

सर्दी में ब्लड प्रेशर की समस्या बढ़ जाती है। ऐसे में इस मौसम में अगर आप इस समस्या से बचना चाहते हैं तो गजक बेहतर साबित होगा। इसमें मौजूद तिल में पर्याप्त मात्रा में सिसामोलिन पाया जाता है, जो ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में काफी मददगार साबित हो सकता है।

शरीर को मिलती है एनर्जीः-

गर्म तासीर होने की वजह से सर्दियों में गजक खाना काफी फायदेमंद होता है। इसे खाने से न सिर्फ आप अंदर से गर्म रहते हैं, बल्कि इसमें मौजूद तिल और गुड़ आपकी एनर्जी बढ़ाने में भी सहायक होते हैं। साथ ही यह आपको संक्रमण से भी बचाता है।"

गजक, तिल व गुड़ से सर्दी में वात, कफ, जुकाम और खांसी जैसी समस्याएं दूर होती हैं। गजक में मिले तिल और पुराने गुड़ के सेवन से शरीर में एनर्जी और तापमान सामान्य रहता है।

(अधीक्षक, राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज)

❖❖❖

तुलसी की चाय

सर्दी में गरमा–गरम चाय किसे पसंद नहीं आती लेकिन अगर चाय हेल्दी हो तो इससे बेहतर क्या हो सकता है। ऐसे में आप तुलसी की चाय पीएंगे तो कई शारीरिक समस्याओं से दूर रहेंगे। हम बता रहे है तुलसी की चाय पीने के फायदे।

ब्लड शुगर रहेगा कंट्रोल मेंः–

नियमित रूप से रोजाना अगर तुलसी की चाय का सेवन किया जाए तो इससे आपका ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल में रहता है। लेकिन अगर आप डायबीटीज के मरीज है, तो तुलसी की चाय में शहद का इस्तेमाल न करें। इसके अलावा तुलसी की चाय पीने से शरीर में कार्बोहाइड्रेट और फैट का मेटाबॉलिज्म सही रहता है, जिससे खून में मौजूद शुगर आपको एनर्जी देने का काम करता है।

तनाव रहता है कमः–

तुलसी की चाय को लेकर अब तक हुई कई स्टडीज में यह बात साबित हो चुकी है कि तुलसी की चाय शरीर में मौजूद स्ट्रेस हॉर्मोन कॉर्टिसोल के स्तर को बनाए रखने और कम करने में मदद करती है। जब शरीर में कॉर्टिसोल का लेवल कम होगा तो जाहिर सी बात है कि आपका ओवरऑल स्ट्रेस भी कम हो जाएगा।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

BRICS का स्थायी सदस्य बना इंडोनेशिया:-

दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम देश इंडोनेशिया BRICS का स्थायी सदस्य बन गया है। साल 2025 में BRICS की अध्यक्षता करने जा रहे ब्राजील ने इसकी आधिकारिक घोषणा की। इंडोनेशिया और चीन ने इस फैसले का स्वागत किया है। ब्राजील ने कहा कि इंडोनेशिया को 2023 में जोहानिसबर्ग समिट में ही ब्रिक्स में शामिल होने की हरी झंडी मिल गई थी, लेकिन तत्कालीन जोको विडोडो सरकार ने राष्ट्रपति चुनाव तक रुकने की मोहलत मांगी थी। चुनाव खत्म होने के बाद राष्ट्रपति प्रोबोवे सुबियांतो ने अक्टूबर 2024 में पदभार संभाला। इसके बाद ब्रिक्स का मेंबर बनने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया। साउथ अफ्रीका ने साल 2023 में ईरान, UAE, इजिप्ट और इथोपिया के साथ सऊदी अरब के शामिल होने की घोषणा की थी।

स्कूली शिक्षा में गिरावट: 37 लाख कम हुए नामांकन:-

2023–24 में देशभर के स्कूलों में पिछले वर्ष की तुलना में 37 लाख कम नामांकन हुए है। 2022–23 में छात्रों की संख्या 25. 17 करोड़ थी जो 2023–24 में घट कर 24.80 करोड़ रह गई है। छात्राओं की संख्या में 16 लाख और छात्रों की संख्या में 21 लाख की गिरावट आई है। यह जानकारी शिक्षा मंत्रालय के यूडीआईएसई डेटा से मिली है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि प्रिपरेटरी स्तर पर 3.70% और मिडल स्कूल तक आते–आते 5. 20% बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं। सेकंडरी स्तर पर यह प्रतिशत बढ़ कर 10.90 हो जाता है। अलग–अलग कारणों से छात्र 9वीं से 12वीं के बीच सबसे ज्यादा स्कूल से ड्रॉप आउट होते हैं।

गर्मी के दिनों में हुआ 41 दिन का इजाफा:-

दुनिया में 2024 में जलवायु परिवर्तन की वजह से भीषण गर्मी के दिनों में औसतन 41 दिन की वृद्धि हुई है। यूरोपीय जलवायु एजेंसी कॉपरनिकस की रिपोर्ट में कहा गया है कि रेकॉर्ड के हिसाब से 2024 सबसे गर्म वर्ष बनने वाला है। यह पहला ऐसा साल है जिसमें वैश्विक औसत तापमान पूर्व–औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक होगा।

चिली की पूर्व राष्ट्रपति को इंदिरा गांधी अवॉर्ड:-

चिली की पूर्व राष्ट्रपति मिशेल बैशले को साल 2024 के "इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार" के लिए चुना गया है। मिशेल को शांति, लैंगिक समानता, मानवाधिकार और विकास में उनके योगदान के लिए यह पुरस्कार दिया जाएगा।

फलस्तीन-इस्राईल जंग बंदी, के बाद गज्ज़ा में मना जश्न:-

गाजा में जहां एक ओर बेघर फिलिस्तीनियों का अपने इलाक़ों में लौटने का सिलसिला जारी है, वहीं दूसरी ओर राहत सामग्री के ट्रक भी गाजा पहुंच रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक, रविवार को 630 सहायता ट्रक गाजा में दाखिल हुए। संघर्ष विराम के पहले दिन हमास ने तीन बंधकों को रिहा कर दिया। तीनों महिलाएं खुश और स्वस्थ नज़र आईं। समझौते के मुताबिक, बंधकों के बदले में इस्राईल ने 90 फिलिस्तीनी महिलाओं और बच्चों को रिहा कर दिया, जिनमें राजनेता खालिदा जर्रार और पत्रकार रोला हसनैन भी शामिल हैं. इसके अलावा सीजफायर के बाद क्षतिग्रस्त इलाक़ों से 62 शहीदों के शव बरामद हुए. याद रहे कि गाजा पर 15 महीने से जारी इस्राईली युद्ध में बच्चों और महिलाओं समेत 47 हज़ार 899 फिलिस्तीनी शहीद हो चुके हैं, जबकि 100,000 से ज़्यादा फिलिस्तीनी घायल हैं और हज़ारों लापता हैं।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 22/01/2025 تاریخ

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़—ए—जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए।

आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)
WEBSITE: WWW.NADWA.IN
Email : nizamat@nadwa.in

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतिया)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
ONLINE DONATION LINK
https://www.nadwa.in/donation

UPI करते समय रिमार्क में मद (अतिया/ज़कात/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं **08736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 23 - Issue 12

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3